भारत की हिन्दी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाएं

डा० विश्वनाथ शर्मा
एम० ए० पी-एच० डी०



कलम घर प्रकाशन
पोकरण हवेली, जोधपुर.

प्रकाशक
कलम घर प्रकाशन
पोकरण हाऊस, जोधपुर

मूल्य दस रुपये मात्र

मुद्रक
कलम घर प्रकाशन
जोधपुर.

'भारत की हिन्दी नाट्य सस्थाए एव नाट्य शालाए' के लेखक डॉ० विश्वनाथ शर्मा एक कुशल रग कर्मी हैं और नाटक तथा रगमच म इनकी गहरी दिलचस्पी भी है। नाटक और रगमच से गहरी आत्मीयता के कारण ही इन्होंने लगन और तत्परता के साथ रगमच पर महत्वपूर्ण अनुसधान कार्य भी किया है। प्रस्तुत पुस्तक इस गलतफहमी को निश्चय ही दूर करने मे सहायक साबित होगी कि हिन्दी का अपना विकसित रगमच नहीं है। इस पुस्तक मे हिन्दी-भाषा भाषी क्षेत्र की नाट्य सस्थाओं और नाट्यशालाओ की परम्परा और उनकी वर्तमान गतिविधियो का जो व्यवस्थित आकलन हुआ है उसमे हिन्दी-रगमच की व्यापकता और विविधता का पर्याप्त परिचय मिल जाता है। स्वाधीनता आदोलन के दौरान 'इप्टा' आदि नाट्य सस्थाओ की प्रतिबद्ध सक्रियता तथा स्वाधीनता के बाद राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और एशियायी रगमच के कारण हिन्दी नाटक और रगमच के स्वरूप मे काफी बदलाव आया है। यह कहा जा सकता है कि इन सस्थाओ के प्रभाव के कारण ही आधुनिक हिन्दी नाटक पुस्तकालयों से निकलकर रगमच पर आ सके हैं और रचनाकार अब केवल पाठको के लिए नहीं बल्कि दर्शकों के लिए नाटक लिखने लगे हैं। डॉ० शर्मा की इस पुस्तक स हिन्दी रगमच की एक ऐसी परम्परा का ज्ञान होता है जिसम वर्तमान की वास्तविकता और भविष्य की सभावना के सकेत निहित है।

जोधपुर
१५-१-१९७३

- नामवर सिंह -
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय

दो शब्द

गुरुवर डॉ० सूर्य प्रसाद जी दीक्षित की आज्ञानुसार मेरी शोध यात्रा से एकत्रित एव सचित सामग्री पुस्तक रूप मे आ सकी अस्तु मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मैंने अपने शोध विषय "हिन्दी रगमच का उद्भव और विकास" हेतु उत्तर भारत की यात्रा की थी। इस यात्रा म मैं भारत के सुप्रसिद्ध रगकर्मियो से मिला जिनके सौजन्य से मुझे नाट्य सस्थाओ एव नाट्य शालाओ के बारे मे बहुत कुछ सामग्री उपलब्ध हुई।

प्रस्तुत पुस्तक उक्त प्रबध पर आधारित है। इसमे अधिक से अधिक नाट्य सस्थाओ तत्सम्बधित रगकर्मियो, मचित नाटको, सस्थाओ के उद्भव एव विलुप्त काल तथा उनका हिन्दी रगमच को विशिष्ट योगदान आदि पर यथासभव लिखने का प्रयास किया गया है। प्रारभ की सस्थाओ की परिचर्चा तो अधिक से अधिक हो सकी है, किन्तु प्रकाशन-सीमा के कारण राजस्थानी नाट्य सस्थाओ को वाछित विस्तार नही मिल सका।

मेरा यह दावा नही है कि मैंने सभी नाट्य सस्थाओ एव नाट्य शालाओ का पूर्ण परिचय इसमे दे दिया है। सभवत बहुत सी सस्थाओ का इसमे वर्णन छूट भी गया होगा जिसे हम द्वितीय सस्करण मे समाविष्ट करने का यत्न करेंगे। पाठको एव रगकर्मियो से निवेदन है कि वे हमे इस सम्बध म सूचनाए प्रेषित कर कृतकृत्य करे।

मैंने अनुभव किया है कि नाटक का इतिहास तो हिन्दी साहित्य मे प्राप्य है किन्तु रगमचीय गति विधियो का इतिहास शनै शनैः काल कवलित होता जा रहा है, इसी दृष्टि से यह पुस्तक लिखी गयी है, ताकि भूले-बिसरे रगकर्म को यथावत् उभारा जा सके। शीघ्रतावश कम्पोजिग की कुछ त्रुटियाँ रह गई होगी, उसके लिये क्षमा प्रार्थी हूँ। भविष्य मे उन्हें अवश्य सुधार लिया जाएगा।

डॉ० नामवर सिंह जी ने इस पुस्तक की भूमिका लिख कर मुझे गौरवान्वित किया है अस्तु उनके प्रति मैं हृदय से आभारी हूं। मैं अपने परम मित्र श्री पूसाराम प्रजापति का आभारी हूं जिन्होंने मुझे इस पुस्तक की प्रेस कापी तैयार कराने में बहुत सहयोग दिया है। इसके रेखा चित्रों की रचना का श्रेय मेरे मित्र-अनुज श्री वस्तीराम प्रजापति 'निराश' को है। प्रकाशक श्री हुकमराज जी बाफना, श्री धनपत जी लूनवाणी एवं उनके सभी कार्य कर्ताओं ने अपने अथक प्रयत्नों से इसे शीघ्रा तिशीघ्र प्रकाशित करने का उपक्रम किया अस्तु वे धन्यवाद के पात्र हैं।

पाठकों से निवेदन है कि वे अपनी प्रतिक्रियाओं द्वारा मेरा पथ प्रदर्शित करते रहें।

२६ जनवरी १९७३

—डॉ० विश्वनाथ शर्मा
विष्णु-सदन
१०७, महाराजा अजीत सिंह कॉलोनी
बाल निकेतन रोड, जोधपुर (राज०)



अनुक्रम



नाट्य संस्थाएं

नाट्य शालाएं



परिव्राजक पूज्य पिता श्री स्व0 पं. सांभरीमल जी
(बाबा नेमनाथजी) की पुण्य स्मृति में सादर समर्पित

प्रयाग की नाट्य संस्थाएं

प्रयाग की नाट्य संस्थाएं:--

प्रयाग की हिन्दी नाट्य संस्थाएं १८७०-७१ में आरम्भ बतलायी जाती हैं। ꕥ इस दृष्टि से प्रयाग की निम्नांकित संस्थाओं का पता चलता है–

१. आर्य नाट्य सभा

यह प्रयाग की सबसे पुरानी संस्था है जिसके द्वारा देवकी नदन त्रिपाठी कृत 'भारती हरण', लाला श्रीनिवासदास कृत 'रणधीर प्रेम मोहिनी (६ दिसम्बर १८७१), शीतला प्रसाद त्रिपाठी कृत 'जानकी मंगल नाटक' (२६ अगस्त १८७६) तथा "जय-नारसिंह", लाला शालिग्राम वैश्य कृत 'काम कन्दला', प० देवकी नदन त्रिपाठी कृत 'कलयुगी जनेऊ' आदि नाटक भी अभिनीत किए जा चुके हैं।

२. रेल्वे थियेटर

आर्यनाट्य सभा के समकालीन रेल्वे थियेटर नामक नाट्य संस्था भी काम कर रही थी जिसके द्वारा बहुत सारे नाटक अभिनीत होने की सूचना मिली है जिसमें १४ अगस्त १८७५ई. को 'दुर्गेश नन्दिनी नाटक' का उल्लेख प्राप्त हुआ है। 卐 बतलाया जाता है कि इसमें दुर्ग और कारागार के प्रभावशाली दृश्य तथा राजा वीरेन्द्रसिंह का रंगभूमि में सिर काटा जाना जैसे चमत्कार भी बतलाए गये थे। यह थियेटर भी १८८८-८९ में बंद हो गया।

ꕥ सम्पादक धीरेन्द्रनाथसिंह, जानकी मंगल नाटक, पृ २७.

卐 वही पृ. २६

३. श्री राम लीला नाटक मंडली (१८८६ ई०-१६०७ ई०)

इस संस्था का १८८६ ई० में उदय होने का उल्लेख मिलता है। इस संस्था के कुशल कार्यकर्त्ता प० माधव शुक्ल महादेव भट्ट और गोपालदत्त थे जिनके द्वारा 'सीता स्वयंवर' तथा 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटकों के अभिनीत होने का पता लगा है। ❀ जनवरी फरवरी सन् १६०५ के 'हिन्दी प्रदीप' प्रयाग में श्री बालकृष्ण भट्ट ने 'रामलीला नाटक मण्डली' शीर्षक के अन्तर्गत यह बताया है कि इस मंडली को जन्म देने का श्रेय श्री माधव शुक्ल को है। श्री माधव शुक्ल जो उस समय एक साधारण विद्यार्थी थे ने 'रामायण' को नाटक रूप में मंच पर प्रस्तुत किया था जो तीन दिन तक खेला गया। इस प्रकार उस समय के दीर्घकालिक अभिनय परम्परा का परिचय हमें मिलता है। माधव शुक्ल के ही अथक प्रयत्नों से भारतेन्दु लिखित 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक खेला गया जिसमें आपने 'रोहित' की भूमिका से दर्शकों को चकित एवं मुदित कर दिया था। इनके साथ अन्य अभिनेताओं-हरिश्चन्द्र, शैव्या, नारद और विश्वामित्र आदि के अभिनय भी प्रशंसनीय रहे। 卐 श्री कृष्णदासजी की मान्यता है कि सन् १८६८ में माधव शुक्ल के साथ साथ प० बालकृष्ण भट्ट के द्वितीय सुपुत्र प० महादेव भट्ट, प०गोपालदत्त त्रिपाठी आदि के सहयोग से 'श्री रामलीला नाटक मण्डली' स्थापित हुई थी। उसका उद्देश्य था 'रामलीला के प्रसंग में वर्तमान राजनीति की भी आलोचना करना।' सबसे पहला नाटक 'सीय-स्वयंवर' इसके अवधान में अभिनीत किया गया जिसके लेखक प० माधव शुक्ल थे। धनुष भंग के प्रसंग में राजाओं की असफलता पर राजा जनक ने जो बात कही उसके साथ-साथ उनके मुख से एक कविता भी कहला दी गयी जिसका आशय भी इस प्रकार था—'ब्रिटिश कूट नीति के समान कठोर इस शिव-धनुष को तोड़ना तो दूर रहा, वीर भारतीय युवक इसे टस से मस भी न कर सके—यह अत्यन्त दु:ख का विषय है

❀ सम्पादक धीरेन्द्रनाथसिंह जानकी मंगल नाटक, पृ ३०

卐 डॉ० कुंवरचन्द्र प्रकाशसिंह हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ ३५२-३५३

■ ।' दर्शकों में मालवीयजी इस उक्ति को सहन न कर सके और उसी मौन पर ड्राप डलवा दिया गया। ꙮ

आचार्य शिव पूजन सहाय के कथनानुसार श्री रामलीला नाटक मण्डली का उत्पत्ति काल है १८६३ और प्रथम अभिनीत नाटक हैं 'रामायण' तथा 'सत्य हरिश्चन्द्र'। 卐 श्री कृष्णदास ने इसका उत्पत्तिकाल सन् १८६८ और 'सीय स्वयवर' को प्रथम अभिनीत नाटक कहा है। ● इस मत मतान्तर की ओर ध्यान देने से अनुमान लगाया जा सकता है कि 'रामायण' और 'सत्य हरिश्चन्द्र' ही आरंभिक नाट्य कृतिया हैं। सन् १८६३ से १८६८ तक इस प्रकार के नाटकों द्वारा जनता में वरित नाटकों का प्रदर्शन कर उस काल में व्याप्त पारसी रगमच के फल स्वरूप फैले इन दुष्परिणामों को मिटाने का उपक्रम किया गया। इस प्रकार ५-६ वर्ष वर्षों में सरकारी अत्याचारों का भी आधिक्य देखकर इनमे जन जागृति का उद्देश्य प्रबल हो उठा जिसके परिणाम स्वरूप न् १८६८ में माधव शुक्ल के द्वारा 'सीय स्वयवर' और १९१६ में 'महाभारत पूर्वार्द्ध' ाटक लिखे गए। वस्तुत. श्री रामलीला नाटक मण्डली का जन्म प्रयाग में सन् १८६३ ई हुआ। सर्व प्रथम नाटक सीय स्वयवर की अपेक्षा 'रामायण' को मानना अधिक युक्ति युक्त है।

कालान्तर मे इस सस्था मे अल्मोडा के लक्ष्मीकान्त भट्ट, मालवीयजी के सुपुत्र रमाकान्त मालवीय, 'अभ्युदय' के सम्पादक श्री कृष्णकान्त मालवीय, वेणी प्रसाद गुप्त और देवेन्द्र बनर्जी सम्मिलित हुए। १९०७ तक इस सस्था ने मिल जुल कर कार्य किया किन्तु मालवीयजी के परिवार के नवयुवकों से कुछ मतभेद हो जाने के कारण यह मंडली

ꙮ श्री कृष्णदास . हमारी नाट्य परम्परा, पृ ६२६

卐 डॉ० कु० चन्द्र प्रकाशसिंह : हिन्दी नाट्य साहित्य और रगमच की मीमासा, पृ. ३५२-५३

● श्री कृष्णदास ' हमारी नाट्य परम्परा, पृ. ६२५

नाश हो गयी फिर भी अप्रतिहत उत्साह सम्पन्न पं० माधव शुक्ल ने १९०८ ई० 'हिन्दी नाट्य समिति' के नाम से इसका पुनगर्ठन किया।

४. नागरी प्रवर्द्धिनी सभा, काशी

वैसे इस संस्था की उत्पत्ति १८९३ से पूर्व की बतायी जाती है किन्तु इसके लि कोई पुष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह संस्था श्री बालकृष्ण भट्ट द्वारा स्थापित गयी थी। इसमें वर्ष में एक दो बार नाटक प्रदर्शित किए जाते थे। पं० मदन मोह मालवीय तथा पं० गंगानाथ के निवास स्थानों पर भी नाटक खेले जाते थे। इस संस के द्वारा ही बालकृष्ण भट्ट हिन्दी नाटकों के अभिनय के लिए माधव शुक्ल आदि बुलाया करते थे। बताया जाता है कि सन् १९१० में प्रयाग में 'प्रेमघनजी' के नाट 'प्रयाग रामागमन' का सफलतम प्रदर्शन हुआ था। कहा गया है कि मालवीयजी शकुन्तला का अभिनय किया था। उनके घर पर संस्कृत, हिन्दी सभी प्रकार के नाट खेले जाते थे। राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने भी इस संस्था के नाटकों में भा लिया था। ‌❀

५. क्वायज ड्रामेटिक क्लब, काशी.

डॉ० सिंह के मतानुसार १९०४-५-६ ई० के आस पास कतिपय तरुणों क्वायज ड्रामेटिक क्लब नामकी एक संस्था स्थापित की थी। इन तरुणों में बाबू व्रजचन्द्र झूठे गोटेवाले गोपालदास, मढ़ीवाले श्रीचन्द गुप्त और राय जगन्नाथदास आदि थे। इ क्लब का पहला कार्यक्रम राय जगन्नाथदास के घर पर एक छोटे से कमरे में एक छोट पर्दा लगा कर भरतेन्दु के 'अंधेर नगरी' और 'नीलदेवी' के अभिनय सहित सम्पन्न हुआ था इस क्लब का यही प्रथम और अंतिम कार्यक्रम था। 卐 इसके बाद श्री व्रजचन्द ने जै नाटक मण्डली से अपना सम्बन्ध जोड़ा किन्तु श्रीचन्दजी (इस मंडली के कर्णधार) से

❀ डॉ० कु० चन्द्र प्रकाशसिंह हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा, पृ ३५७-५८

卐 वही पृ ३६०

दो की माग की बचनबद्धता का निर्वाह न हो सकने के कारण उन्होंने उसे छोड़ कर १९०७ अथवा १९०८ के पूर्वार्द्ध में 'नागरी नाटयकला संगीत प्रवर्तक मंडली' नामक स्था की स्थापना की। ॐ

३. श्री नागरी नाट्य कला-संगीत प्रवर्तक मंडली, काशी (१९०६-)

'अग्रवाल ड्रायज-ड्रामेटिक क्लब' के जन्म के दो वर्ष पश्चात १९०६ ई० में इस स्था का जन्म हुआ। इसी संस्था के आपसी मतभेद के फल स्वरूप 'नागरी नाटक मण्डली' तथा 'भारतेन्दु नाटक मण्डली' की स्थापना की गई थी। इस संस्था के संस्थापकों में ब्रजचन्दजी, कृष्णचन्द्रजी तथा बाबू कृष्णदासजी प्रमुख थे। 卐 श्री कृष्णदास ने 'नागरी नाट्य कला संगीत प्रवर्तक मण्डली' की स्थापना १९०६ की स्वीकार की है। इसके संस्थापकों में भारतेन्दु के भतीजे श्री बृजचन्दजी, शाह घराने के श्री कृष्णदासजी था काशी के प्रसिद्ध अभिनेता हरिदासजी माणिक थे। बाद में इसके दो भाग-'भारतेन्दु नाटक मण्डली' और 'काशी नाटक मण्डली' हो गए। ● भारतेन्दु नाटक मण्डली १९०७-८ के पूर्वार्द्ध में स्थापित सिद्ध की गई है। इस मण्डली में श्री ब्रजचन्द, कृष्णचन्द्र, शाहजादा बाबू कृष्णदास आदि थे। उन्होंने विरोधों के बावजूद 'सत्य हरिश्चन्द्र' को 'भारतेन्दु नाटक मण्डली' के अवधान में प्रदर्शित किया। इसके बाद विरोधियों ने नागरी नाटक 'मण्डली' नाम से अपनी अलग संस्था स्थापित करली। इस प्रकार 'श्री नागरी नाट्यकला-संगीत प्रवर्तक मण्डली' दो संस्थाओं की जन्मदात्री कहलायी। इसकी सम्पत्ति (पोशाकें, पर्दे, पंखे आदि) इन दोनों संस्थाओं ने आपस में बांटली।

ॐ डॉ. कु. चन्द्र प्रकाशसिंह : हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृ. ३६०

卐 सम्पादक . धीरेन्द्रनाथसिंह : जानकी मंगल नाटक पृ. ७

● डॉ० श्री कृष्णदास . हमारी नाट्य परम्परा, पृ० ६२८

७. भारतेन्दु नाटक मण्डली (१९०६) काशी.

इस संस्था का प्रथम मंचित नाटक 'सत्य हरिश्चन्द्र' कहा जाता है। संस्था सर्वेसर्वा बाबू कृष्णचन्द्र एवं बाबू व्रजचन्द्र थे। इस नाटक में मंच पर प्राचीन वातावरण उपस्थित करने हेतु सीन-सीनरी की सहायता ली गयी थी। पौराणिक पात्रों के अनुरूप उनके पास पर्याप्त वेशभूषा नहीं थी। भगवान के प्रकट होने के समय ट्रान्सफर सीन प्रयोग द्वारा श्मशान का दृश्य स्वर्ग में परिवर्तित दिखाया गया था। ❀ इस मण्डली प्रमुख कलाकार गोविन्द शास्त्री दुगवेकर हरिदास माणिक, जगमोहन दास शाह, धर्मद गुर्जर वृन्दावन दास गुजराती, बालकृष्णदास अग्रवाल (बल्ली बाबू), हरिदास आदि थे। इस संस्था ने राधा कृष्णदास का 'महाराणा प्रताप' भी खेला था जिसमें प० धर्मदत्त वेदशास्त्री ने प्रताप' की तथा गोविन्द शास्त्रीने अकबर' की भूमिकाएं की थी। 卐 यह भी मान्यता है कि यह नाटक दो वर्षों तक खेला गया था। 'महाराणा प्रताप' की भूमिका निर्वाह में मतान्तर मिलता है। गोविन्द शास्त्री दुगवेकर भी अच्छे नाटककार थे। उनके दो नाटक 'सुभद्राहरण का प्रदर्शन ठठेरी बाजार की शेरवानी कोठी में हुआ था। सुभद्रा की भूमिका डा० राय गोविन्दचन्द ने की थी। फिर यह नाटक मातीझील वाले भवन में हुआ था। 'हर हर महादेव' नाटक भारतेन्दु के राम कटोरे वाले बाग में हुआ था। ● डॉ० सिंह न 'सौभद्र हरण' को गोविन्द शास्त्री का मराठी हिन्दी रूपान्तर माना है। ※ श्री धीरेन्द्रनाथसिंह ने उसका मराठी नाम संगीत सौभद्र (सौभद्रहरण ?) बताया है। ◐ इस मण्डली के कुल मंचित नाटक हैं-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत 'सत्य हरिश्चन्द्र' (१९०६ ई०) गोविन्द शास्त्री दुगवेकर (१९१८ ई०) कृत 'हर हर महादेव' और सुभद्राहरण, माधव शुक्ल कृत 'महाभारत उत्तरार्द्ध',राधेश्याम

❀ डॉ कु चन्द्र प्रकाशसिंह हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा, पृ ३६

卐 नागरी पत्रिका (वर्ष १ अंक ६ ७ मार्च अप्रेल) पृ ६१

● वही, पृ ६१-६२

※ रे० हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा, पृ. ३६२

◐ सम्पादक धीरेन्द्रनाथसिंह जानकी मंगल नाटक, पृ १०

ापा वाचव कृत 'वीर अभिमन्यु, 'प्रह्लाद', और 'परिवर्तन', डी एल राय कृत 'मेवाड पतन,' शाहजहा, और चन्द्र गुप्त, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' कृत ' भीष्म', ज्वाला राम नागर कृत 'गुरुद्रोण' और 'दस्यु-दमन', जयशकर प्रसाद कृत 'चन्द्रगुप्त', कन्द गुप्त और ध्रुव स्वामिनी, ब्रजरत्नदास व डॉ० भानुमेहता कृत 'भारतेन्दु नाट्य रूपक' आदि। ❁ सन् १९१२-१४ के बीच बाबू ब्रजचन्द्र का स्वर्गवास हो जाने के कारण इस सस्था मे शैथिल्य आ गया। बाबू मनोहरदास एव डॉ० वीरेन्द्रनाथ दास न आदर्श-भारतेन्दु-नाटक-मण्डली' के नाम से इस सस्था को चलाया। इसके बाद अर्थाभाव से उक्त मण्डली निष्क्रिय हो गई। कालान्तर मे इसे बटुक प्रसाद खत्री (१९१६) ने सभाला। १९२० ई० के आस पास केशवराम टडन ने इसे नव जीवित किया। यह सस्था १९४० ई० मे 'दुर्गादास' नाटक का मचन करके लगभग १० वर्षों तक मौन रही। पुन सन् १९५० मे भारतेन्दु-जन्म शती के अवसर पर बाबू ब्रजरत्न दास, प सावलजी नागर तथा डा० भानुशकर मेहता कृत 'भारतेन्दु नाट्य रूपक' को अभि-मचित किया गया जिसे लगभग ३००० से भी अधिक दर्शकों ने देखा। इसके बाद किसी अन्य आयोजन की सूचना नही मिलती।

इस सस्था के प्रमुख कलाकार थ। गोविन्द शास्त्री दुगवेकर, केशवराम टडन, बालकृष्णदास, डा० वीरेन्द्रनाथदास, जगन्नाथदास गुप्त, कु कृष्णकोल, भगवती प्रसाद मिश्र, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र,' बेनी प्रसाद गुप्त, वीरेश्वर बैनर्जी, डॉ० जगनाथ प्रसाद शर्मा, पुरुषोत्तम टडन, रायकृष्णदास, द्वारिकानाथ बोहरा, महेन्द्रलाल मेढ, पुरुषोत्तम पड्या 卐 प० निष्कामेश्वर मिश्र, चन्द्र शखर दीक्षित, बदरीलाल गोस्वामी, हरिदास माणिय आदि। माणिकजी 'सत्य हरिश्चन्द्र नाटक' में शैव्या का अभिनय करते जिसे देख दर्शक रो पडते थे। ● निश्चय ही इसके आयोजन सफल सिद्ध होते रहे होंगे।

१' ———— —जानकी मगल नाटक, पृ १०

❁ सम्पादक धीरेन्द्रनाथसिंह

卐 वही, पृ. १२

● नागरी पत्रिका (वर्ष १ अक ६-७, मार्च अप्रेल १९६८) पृ. ९७

नागरी नाटक मंडली (१६०८-६-　　) काशी

विद्वानों ने इसे सन् १६०६ में स्थापित माना है। इस संस्था का प्रथम अभिनीत नाटक है राधाकृष्णदास कृत 'महाराणा प्रताप'। कहा जाता है कि इसके नाट्य प्रदर्शन को देखने के लिए बड़े बड़े नरेश और प्रतिष्ठित दर्शक एकत्र हुए थे। ❀ इसके अस्तित्व काल के विषय में अनेक मतान्तर हैं। डा० भानुमेहता और धीरेन्द्रनाथसिंह इसे सन् १६०८ में स्वीकार करते हैं जबकि श्री शिवपूजन सहाय इस संस्था के प्रथम आयोजन ('सत्य हरिश्चन्द्र') की तिथि २७ जुलाई १६०६ लिखते हैं। 卐 वस्तुतः इसके काल निर्धारण और प्रथम आयोजन का प्रश्न विवादास्पद है। डॉ० सिंह का मत है कि इस संस्था ने 'महाराणा प्रताप' नाटक से ही शुभारम्भ किया होगा।

१६०८-६ से १६६८ तक के प्रस्तुत नाटकों ● से प० राधाकुमार व्यास प० धर्म दत्त शास्त्री, काशीनाथ खत्री (बच्चूजी) दुर्गाप्रसाद खत्री, गोवर्धनदास खत्री, बाबू श्याम सुन्दरदास, हरिदास माणिक, आनन्द कपूर, भगवती प्रसाद अवस्थी, बनारसीदास खन्ना, बाबू ठाकुरदास, बाबू शिवप्रसाद, प० श्रीकृष्ण शुक्ल, लक्ष्मीनारायण शास्त्री (सेठ) प० विश्वेश्वर नाथ, प० ललिताराम, राम कृष्ण खन्ना, केशवराम टंडन, भैरव प्रसाद प्रसाद शर्मा आदि मुख्य रंगकर्मी थे। 'महाराणा प्रताप' युधिष्ठिर, सम्राट अशोक, महाभारत, भीष्म पितामह, वीर अभिमन्यु, वीर बालक भक्त सूरदास, विश्व मंगल, सत्य स्वप्न, अत्याचार, पाप परिणाम, दमन, देश का दुर्दिन, रक्षा बन्धन, राणा अमरसिंह कृष्णार्जुन युद्ध जैसे नाटकों को देखते हुए कहा जा सकता है कि नाटकों का चयन सर्वथा दर्शकों के उपयुक्त था चूंकि पारसी रंगमंच उस समय फैला हुआ था और कई उपर्युक्त नाटक उन्होंने भी खेले थे पर इनके प्रस्तुतीकरण का अपना निजी ढंग था। हाँ पारसीक

❀ डॉ० कु० चन्द्रप्रकाशसिंह　हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा, पृ.३६१

卐 प० धीरेन्द्रनाथसिंह　जानकी मंगल नाटक पृ १३

● वही, पृ १४ – १६

मंच का थोड़ा बहुत प्रभाव नागरी नाटक मण्डली के कलाकारों पर अवश्य पड़ा। आचार्य शिव पूजन सहाय ने लिखा है—मैंने भी मण्डली का अभिनय देखा है देखने से अनुभव हुआ कि अभिनेताओं में अभी पारसीपन की बू बाकी है किन्तु इसके लिए मण्डली नहीं, हमारा समाज दोषी है। मंडली के पास काफी फण्ड है, सुयोग्य स्टेज-मैनेजर है, निपुण हारमोनियम मास्टर है, अच्छे से अच्छे मेप है, सुन्दर सीन-सीनरी है, पर साहित्यिक दृष्टि से अभिनय में दिलचस्पी लेने वालों का बड़ा टोटा है।" ❀ प्राप्त प्रमाणों के अनुसार कहा जा सकता है कि काशी विश्वविद्यालय के शीला न्यास समारोह (१९१६ ई०) में माधव शुक्ल कृत "महाभारत" खेला गया था। उस समय इस मण्डली के यशस्वी अभिनेता पं० धर्मदत्त शास्त्री के राष्ट्रीय हिन्दी रंगमंच की स्थापना के आवाहन पर 'देशी नरेशों ने लगभग ४८ हजार रुपये के दान की घोषणा की थी।' 卐 १९३९ ईसवी में कबीर चौराकाशी में इस संस्था की अपनी नाट्यशाला निर्मित हुई जिसका उद्घाटन १९४० ई० में डा० सम्पूर्णानन्दजी के कर कमलों से हुआ। कुछ विद्वानों के अनुसार 'नागरी नाटक मण्डली' की स्थापना कलकत्ता में हुई थी। ● यह संस्था एक दीर्घकाल तक निष्क्रिय रही। ३-अप्रेल १९६८ से काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रांगण में जब हिन्दी रंगमंच का १०० वां जन्म महोत्सव मनाया तो ६ अप्रेल को नागरी नाटक मण्डली द्वारा भारतेन्दु कृत 'सत्य हरिश्चन्द्र' को [...]शैली में प्रदर्शित किया गया था इसकी विशेषता यह थी कि उसमें ध्वनि विस्तारक यन्त्र [त]था बिजली के प्रकाश का प्रयोग नहीं किया गया। ◐

रंगमंचीय समीक्षा की दृष्टि से यदि इन दोनों नाट्य संस्थाओं का मूल्यांकन किया जाय तो स्पष्ट होगा कि १९२२-२३ में जब 'वीर अभिमन्यु' नाटक प्रस्तुत किया गया

❀ डा० कु० चन्द्रप्रकाशसिंह:—हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृष्ठ ३६५-३६६

卐 सम्पादक धीरेन्द्रनाथसिंह, आनन्द मंगल नाटक पृष्ठ १५

● हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृष्ठ ३५२

◐ आनन्द मंगल नाटक पृष्ठ १६

तब दर्शकों की रुचि राष्ट्र और धर्म के प्रति अधिक थी अच्छे नाटक ही चलते थे। दर्शकों की काफी भीड जुटती थी। अच्छे अभिनेताओं को दर्शक स्वर्ण और रजत प देकर उनका उत्साह बढ़ाते थे साथ ही जन मानस मे इस प्रकार की भावना भरते अभिनेताओं के वेश विन्यास मे विदेशी वेषभूषा का बिल्कुल प्रयोग नही करते थे।❀ परिष्कृत स्वदेशी कला धीरे-धीरे लुप्त हो गई और यही हिन्दी रंगमंच का युग समाप्त हो गया।

हिन्दी नाट्य समिति (१९०८-१९१९) प्रयाग

प्रयाग मे बालकृष्ण भट्ट और मुरलीधर मिश्र जैसे साहित्य सेवियों की प्रेरणा नागरी 'प्रर्द्धिनी सभा' की स्थापना हुई थी। इसी के अवधान मे सन् १९०० के आसप वहां 'हिन्दी नाट्य समिति' की स्थापना हुई जिसके मुख्य संचालक माधव शुक्ल थे। समिति लगभग १९१९ तक चली 卐 श्री रामलीला नाटक मण्डली मत भेद हो जाने कारण भग हो गई। इस प्रकार दो हिन्दी नाट्य समितियों का होना निश्चित होता एक जो १९०० मे बनी और दूसरी जो १९०८ ई० में अधिकांश विद्वानों ● ने १९ ई० वाली 'हिन्दी नाट्य समिति' का उल्लेख किया है।

निश्चय ही हिन्दी नाट्य समिति को चलाने के पीछे प० बालकृष्ण भट्ट की ब बडी प्रेरणा थी। कहा जाता है कि माधव शुक्ल के नाट्य प्रयोगो मे प० बालकृष्ण स्वयं सूत्रधार के रूप मे उपस्थित होकर अपनी ओजस्वी वाणी से प्रेक्षकों को नाटक आदर्श और उद्देश्य की भावना से आविष्ट कर देते थे ◔ इस संस्था के रंगकर्मी प्रथ चन्द्रप्रसाद, बाबू भोलानाथ, मुद्रिका प्रसाद, प० लक्ष्मीनारायण नागर, मैत्रेय बाबू, रा

❀ श्रीकृष्णदास:—हमारी नाट्य परम्परा पृष्ठ ६२६

卐 डा० कु० चन्द्रप्रकाशसिंह—हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा पृष्ठ ३४

● ,, ,, ,, पृष्ठ ३५४

◔ श्री कृष्णदास—हमारी नाट्य परम्परा पृष्ठ ६२६

विहारी शुक्ल, देवेन्द्रनाथ बनर्जी, प्रमथनाथ भट्टाचार्य आदि थे। कालान्तर में प० पुरषोत्तमदास टण्डन, पं० सत्यानन्द जोशी, प० मुरलीधर मिश्रा स्व० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के पुत्र भी इसमें सम्मिलित हुए थे। माधव शुक्ल वीर व करुण रस के प्रमथनाथ भट्टाचार्य शान्तरस के तथा महादेव भट्ट हास्यरस के सफल अभिनेता थे। रास बिहारी शुक्ल खल नायक तथा देवेन्द्रनाथ बनर्जी और मुद्रिका प्रसाद सभी पात्रों के अभिनय के लिये विख्यात थे ❀ इस समिति ने राधाकृष्ण दास लिखित 'महाराणा प्रताप' माधव शुक्ल कृत 'महाभारत' (पूर्वार्द्ध) आदि नाटक प्रस्तुत किए। प्रथम आयोजन में राधाकृष्ण दास दर्शक मण्डल में विराजमान थे, द्वितीय में 'प्रेमघन' और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा शिव पूजन सहाय भी थे। नाटक महाभारत में पंडित माधव शुक्ल, वेणीप्रसाद शुक्ल, प० महादेव भट्ट आदि ने क्रमश भीम, दुर्योधन, और धृतराष्ट्र की भूमिकाएं की थी। आचार्य शिवपूजन सहाय ने यह सब देखकर लिखा था—"आजतक मैंने हिन्दी रंगमंच पर वैसा सफल एवम् प्रभावशाली अभिनय नहीं देखा है। (—विशाल भारत, मई १९४४)" सत्य हरिश्चन्द्र नाटक समिति के द्वारा प्रदर्शित हुआ था जहां "हिन्दू पंच" के सम्पादक प० ईश्वरी प्रसाद शर्मा माधव शुक्ल के साहित्यिक गुरु) भी दर्शकों में उपस्थित थे 卐

श्री कृष्णदास के अनुसार 'महाराणा प्रताप' नाटक में शुक्लजी, प्रमथनाथ, देवेन्द्र नाथ बैनर्जी, लक्ष्मीकान्त भट्ट और महादेव भट्ट ने क्रमशः प्रताप, भामाशाह, मालती, गुलाबसिंह और कविराज की भूमिकाएं की थी' सन् १९१५ में प्रयाग में यही 'महाभारत नाटक' डा० श्यामसुन्दरदास की अध्यक्षता में अभिनित हुआ था जिसमें शुक्लजी ने भीम, महादेव भट्ट ने धृतराष्ट्र रासविहारी शुक्ल ने दुर्योधन, बाबू प्रमथनाथ भट्टाचार्य ने युधिष्ठर, लक्ष्मीकान्त भट्ट ने शकुनि, बा० पुरषोत्तमनारायण चड्डा ने अर्जुन, रामनारायण सूरी ने सजय वेणी शुक्ला ने विदुर और देवेन्द्रनाथ बनर्जी ने द्रौपदी का अभिनय किया था।

❀ डा० कु० चन्द्रकांतसिंह हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमच की मीमांसा पृष्ठ ३५४-५५
卐 वही पृष्ठ ३५५

बाबू शिवपूजन सहाय का एतद्विषयक कथन महत्व पूर्ण है "यदि मैं बल, इतना कह सकता हूँ कि प० माधव शुक्ल जैसा भीम और प० महादेव भट्ट जैसा भर आजतक मैंने किसी रगमच पर नही देखा है तो मैं यह भी जोर देकर कहना चाहत कि प० राम बिहारी शुक्ल जैसा दुर्योधन भी मैंने कही नही देखा है ※

उक्त विद्वानो के कथनो में कुछ अर्थान्तर मिलता है। डा० सिंह ने प० वेणीप्र शुक्ल को दुर्योधन की भूमिका करते बतलाया है, श्री कृष्ण दास ने तथा शिवपूजन स ने राम बिहारी शुक्ल का दुर्योधन का अनुकर्ता बतलाया है। अत शिवपूजन सहा कि ही बात अधिक सही ज्ञात होती है क्योकि वह एक दर्शक भी थे। श्रीकृष्णदा भूल से प्रमथनाथ को प्रथम नाथ लिख दिया है। महाराणा प्रताप नाटक को डा०सिंह ने सन् १९१६ मे अभीनित सिद्ध किया है और श्रीकृष्णदास न १९१५ मे प्राप्त प्रम卐 अनुसार इस समिति के कलाकारो द्वारा 'मुद्राराक्षस' का अभिनय प्रदर्शन भी जिसमें बालकृष्ण भट्ट ने भाग लिया था।

प० माधव शुक्ल कवि तथा कट्टर राष्ट्रवादी व्यक्ति थे। ● १९१६ ईसवी शुक्लजी ने राजनीतिक क्षेत्र के कार्यकर्ता होने के नाते जो 'महाराणा प्रताप' ना लोक मान्य तिलक के समक्ष प्रस्तुत किया था। उसका आरम्भ इस गीत से हुआ था "जय जय श्री तिलक देव भारत हितकारी" इसी कारण हिन्दी नाट्य समिति को स रकार का कोप भाजन होना पड़ा ◐ और माधव शुक्ल को प्रयाग छोड कर कलक जाना पडा जहा उन्होने १९१६ में हिन्दी नाट्य परिषद् की स्थापना की।

※ माधुरी वर्ष ८ खण्ड १ पृष्ठ ८५३
卐 दे० हिन्दी नाटय साहित्य और रगमच की मीमासा पृष्ठ ३४३
● वही पृष्ठ ३५९, ३४३, ३५६
◐ ,, ,, ३४३

लाहाबाद यूनिवर्सिटि ऐसोसिएशन—

डॉ० रामकुमार वर्मा १९२५-२६ तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र
इसी बीच आपने इलाहाबाद यूनिवर्सिटि ऐसोसिएशन की स्थापना की
; आप सभापति भी रहे। डॉ० वर्मा ने बताया कि इस संस्था से पूर्व
इस में अंग्रेजी नाटकों के हिन्दी नाट्य अनुवाद खेले जाते थे तथा बंगला नाट्यकार
डी० एल० राय के नाटक भी प्रस्तुत होते थे। डॉ० रामकुमार वर्मा ने इस संस्था
द्वारा हिन्दी नाटकों का प्रचलन किया। इन्होंने 'मेवाड़-पतन' नाटक खेला जिसमें स्वयं
दुर्गादास की भूमिका की।

कल्चरल सेन्टर (१९३८-३९—) इलाहाबाद:—

१ 'कल्चरल सेंटर, इलाहाबाद' सन् १९३८-३९ स्थापित बतलायी जाती है।
माण मिलता है कि इस संस्था के द्वारा कई नाटक प्रस्तुत हुए हैं। २४-२५ सितम्बर
३ को 'बिराज बहू' नाटक इस संस्था ने प्रस्तुत किया था। १ यह नाटक शरत-
चटर्जी के उपन्यास पर आधारित है। इसका प्रस्तुतीकरण व्हीलर मैदान में हुआ
। यद्यपि नाट्य रूपान्तर में वह मूल आत्मा नहीं आ सकी जो उपन्यास में मूल लेखक
दी है किन्तु फिर भी प्रस्तुति की दृष्टि से इसका यह दोष भी छुप गया था। नायिका
श्रीमती सादिव सरन) का अभिनय बहुत सुन्दर था विशेषत उनके द्वारा किए गये
ख और सुख (Joy & Pathos) के भावाभिनय विशेष प्रशंसनीय थे। नायक
(Nital) का
लाम्बर के रूप में श्री अनुकूल बनर्जी का अभिनय, श्री नित्य चौधरी
ताम्बर का अभिनय श्री विजय बोस का साहूकार का अभिनय तथा श्रीमती रेखा
३, जितेन्द्र चटर्जी, सुरेश बिहारीलाल, श्रीराज जोशी. उर्मिला जैन ललिता चटर्जी
दि के भी सराहनीय अभिनय थे। यह नाटक श्री विजय बोस के निर्देशन में प्रस्तुत
ा था। इसका नाट्य रूपान्तर श्री नेमिचन्द जैन (इनदिनों सम्पादक 'नटरंग' नई
ल्ली) ने किया था। इसके अन्य सहायक रंगकर्मियों में श्री पचानन पाठक (जो इन

अमृत बाजार पत्रिका (२८-९-५३)

दिनों गीत एवं नाटक प्रभाग दिल्ली में अधिकारी हैं) थे। कल्चर सेन्टर ने 'नीटा' के अभिनेताओं के सहयोग से 'अनारकली' नाटक पैलेस थियेटर मे ३, ४, सितम्बर १९५४ को रात्रि ९-३० बजे आयोजित किया गया था जिसकी टिकट दर ७, ५), २) रु० थी। इस संस्था के अन्य कलाकारों में श्रीमती तेजी बच्चन, गोपाल कौल आदि के भी नाम प्रमुख हैं। बतलाया जाता है कि इस संस्था के पास पैसा था, सुविधाएं थी किन्तु दृष्टि नहीं थी।

आदर्श कला मन्दिर (१९४३-१९५९) प्रयाग —

इस संस्था के स्थापना-काल में मतान्तर हैं। कुछ विद्वान इसे १९४३ से भी पूर्व स्थापित बताते हैं ॐ विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा स्थापित इस संस्थान द्वारा लक्ष्मीकांत वर्मा कृत "भूख" और "रात की मंजिल", जगदीशचन्द्र माथुर कृत कोणार्क आदि नाटक खेले जा चुके हैं। इसके संस्थापकों में अध्यक्ष प० जगतनारायण शर्मा, सचिव उमेश माथुर के नाम उल्लेखनीय हैं अब तक ७५ प्रस्तुतियां हो चुकी हैं जिनमें श्री सुदर्शन का 'सिकन्दर' श्री माथुर का 'कोणार्क' और श्री अश्क का 'छठा बेटा' है। श्री देवीशंकर अवस्थी ने प्रारम्भ से अपनी संस्थान किशलय मंच खोलने के उपरान्त भी आदर्शकला मन्दिर से अपना प्रेम बनाए रखा। मालूम हुआ है कि डी० एल० रॉय के नाटक तो इस संस्था ने बहुत से खेले ही, साथ 'चन्द्रगुप्त' दुर्गादास', 'जहांगीर', 'रक्षा बन्धन' 'छटा बेटा', सिकन्दर आदि नाटक भी प्रस्तुत किए। श्री अवस्थी ने 'सिकन्दर' नाटक में 'पौरुष' की "चन्द्रगुप्त" में 'चन्द्रकेतु', "रक्षाबंधन" में विक्रमसिंह की तथा "दुर्गादास" में 'शाहजादा' की भूमिकाएं निभाही थी। बतलाया जाता है। कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, अमरेश कुमार बनर्जी (जो अभी वकील हैं) भी इस नाट्य संस्था के सक्रिय सदस्य थे।

इप्टा (१९४२-६०) प्रयाग—

प्रयाग में इप्टा ने श्री नेमिचन्द जैन श्री ओंकार शरद के प्रयत्नों से बहुत प्रतिष्ठा पायी। प्रेमधवन, बलराज साहनी आदि फिल्मी-जगत के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी इस संस्था

ॐ किशलय स्मारिका —सहवर्ती नाट्य संस्थाएं, पृष्ठ २१

न्वन्धित थ । सन् १९४९ में इसने "आदुई कुर्सी" नाटक खेला, फिर इस पर प्रति- लगा दिया गया था अतः स्थानीय अभिनेताओं ने इसका नाम पलट कर 'रंगमंच' दिया । 'रंगमंच' संस्था का विवरण आगे दिया गया है ।

टा, प्रयाग—

इप्टा के समकालीन 'इन्टा' नामक संस्था के उदय होने का कुछ विवरण प्राप्त हुआ बताया जाता है कि राष्ट्रीय चेतना से उद्भूत कुछ अन्य लड़कों ने प्रयाग इन्टा न्डियन नेशनल थियेटर्स) की स्थापना की थी । यह संस्था भी १९५० तक चल कर त हो गई ।

राष्ट्रीय नाट्य संघ (१९४८-अद्यावधि) प्रयाग

इस संघ की स्थापना सन् १९४८ में हुई । यह इन्टरनेशनल थियेटर इंसटीट्यूट स्को से सम्बन्धित है । इसका मुख्य उद्देश्य भारत में रंगमंच आन्दोलन को विकसित ना है जैसे मंच प्रशिक्षण अकादमियां, परम्परागत मंच रूपों की खोज, परम्परागत गमंच की सामग्री, वेश विन्यास मुखौटे और अन्य सम्पत्ति सिम्पोजियम और थियेटर मेनी का आयोजन करके तथा "नाट्य" नामक पत्रिका निकालकर इस सम्पूर्ण रंग न्दोलन को आगे बढ़ाना है । यह संघ वित्तीय एवम् तकनी की सहायता तथा प्रत्येक कर्मी को कई प्रकार की सुविधाएं प्रदान करता है सम्पूर्ण भारत में इसके २३ केन्द्र । इसके अध्यक्ष श्री पालनपुर नवाब बम्बई में तथा महामंत्री श्री ए० आर० कृष्ण रावाद में हैं । १९७० में पूरे भारतवर्ष में जहां जहां इसके केन्द्र हैं इसकी २० वी गांठ मनाई गई ।

लाहाबाद जन नाट्य संघ-प्रयाग

तुलसी लहरी कृत 'राहगीर' (एकतासदी) जो युद्ध और आजादी के बाद की माजिक समस्याओं का चित्रण करता है जन नाट्य संघ द्वारा प्रस्तुत हुआ । यह तीन के का नाटक है इसमें २२ पात्र हैं । नायक, खलनायक की मृत्यु हो जाती है और अन नायिका बच जाती है वैसे भी यह नायिका प्रधान नाटक है । इस प्रकार का नाट्य

प्रदर्शन अपने आप मे एक विशेष था ❀ ऐसा इलाहाबाद मे इससे पूर्व कही प्रदर्शन नही हुआ था।

रंगमंच प्रयाग—

लगभग १६५०-५२ की बात है कि 'इप्टा' का नाम पल्ट कर 'रंगमंच' रख दिया गया था क्योकि कम्यूनिजम का प्रचार करना ही 'इप्टा' का धन्धा रह गया था अतः उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था जिससे वह संस्था बन्द हो गई तब उसका नाम पल्ट कर इन्ही स्थानीय अभिनेताओ ने रंगमंच रख दिया था। रंगमंच ने (टूटे तारे) और 'राहगीर' नाटक पैलेस थियेटर मे खेले फिर गांवो मे घूम घूम कर इसने नाटक किए। कुछ नाटक टैगोर लिखे भी इस संस्था ने खेले बाद मे इसके कलाकार इधर उधर बदली होकर चले गये तब यह संस्था टूट गयी।

नीटा (*North Indian Theatrical Association*)

उत्तर भारतीय थियेटरीकल संघ के तत्वाधान मे अश्क कृत 'अलग अलग रास्ते' १६ दिसम्बर १६५३ को पैलेस थियेटर मे मध्यान्द ३ बजे खेला गया 卐 इसमें भाग लेने वाले कलाकार थे राज जोशी, कौशल बिहारी ललिता चटर्जी, के० बी० लाल, मनोज, प्रकाश, विजय बिन्दू अग्रवाल व विजय बोस आदि। इन नाट्य प्रदर्शनों मे टिकट दरे ४), २), १) रु० होती थी कभी २ ७) ५०, ५) २) ५०, १) ५० भी विशेष आयोजनो पर होती। इसके द्वारा २६ सितम्बर १६५४ में रविन्द्रनाथ टैगोर की हास्यकृति "चिर कुमार सभा" का हिन्दी नाट्य रूपान्तर पैलेस थियेटर म प्रस्तुत किया गया जिसमे जगदीश, कुंज बिहारीलाल मनोज शर्मा, प्रमिता, राज जोशी, कौशल बिहारीलाल और श्री विजय बोस कुशल अभिनेता थे। कवि श्री भारत भूषण अग्रवाल इस नाटक के निर्देशक थे। इसमे ६ स्त्री पात्रो की भूमिकाओं मे ६ अभिनेत्रियो ने भाग

❀ श्री कृष्णदास—**'Rahgir' A Drama of human Values** अमृत बाजार पत्रिका १५ नवम्बर १६५३

卐 लीडर' २ जनवरी १६५४ एवं भारत।

लिया जिसमें श्रेष्ठ अभिनय आशापाल का रहा। देवी सेठ, ललिता चटर्जी, श्रीमति इन्दू अग्रवाल और रानी आनन्द आदि अभिनेत्रियां थी। नाटक कुछ विस्तृत होने के कारण दर्शकों को चार घण्टे बैठे रहना पड़ा। इस नाटक का संयोजन भी श्री सुमित्रानन्दन पंत के द्वारा किया गया था ❀

बतलाया जाता है कि इलाहाबाद के कल्चरल सेन्टर के साथ मिलकर १९५२ में 'नीटा' ने 'अलग अलग रास्ते' और 'अनार कली' नाटक प्रस्तुत किए फिर 'चिर कुमार सभा' अभिनीत किया गया। 'चिर कुमार सभा' के हिन्दी नाट्य रूपान्तर में बहुत कमियां थी निम्न कोटि की शब्दावली का प्रयोग भी बहुतायत था और ध्वनि विस्तारक यन्त्र का प्रबन्ध नहीं था 卐

श्री विजय बोस ने नीटा से सम्बन्धित रह कर बहुत निर्देशन किया है। नीटा का सूत्रपात १९५१ में हुआ था ● और सर्व प्रथम इस संस्था ने अश्क कृत 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ' बाद मे अश्क कृत 'लड़के बाजी का स्वर्ग' फिर भगवती चरण वर्मा के 'दो कलाकार' और 'सबसे बड़ा आदमी' इसके बाद 'आदि मार्ग' का परिवर्तित रूप अलग-अलग रास्ते' खेला गया। २८ अगस्त १९५५ में नीटा के द्वारा रगारग कार्यक्रम आफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल के हॉल में अमृत बाजार पत्रिका और अमृत पत्रिका बाढ पीड़ित सहायता कोष हेतु किया गया था इसका निर्देशन श्री विजय बोस एवं कौशल बिहारी ने किया था। इसमें भी दरें ५), २), १) लगाई गई थी। श्री भगवती चरण वर्मा कृत 'दो कलाकार' और बन धूस कृत 'नयापुराना' नाटक भी ४ दिसम्बर १९५७ को नीटा के द्वारा प्रस्तुत किये जा चुके हैं।

बालकनजी बारी—

प्रयाग में १९५४ में बालकनजी की बारी के मन्त्री श्री विजय बोस द्वारा स्वाधी-

---

❀ 'भारत' १ अक्टूबर १९५४
卐 भारत २७ सितम्बर १९५४
● उपेन्द्रनाथ अश्क:—रंगमंच का व्यवहारिक अनुभव।

नता दिवस के अवसर पर एलगिन रोड स्थित गर्ल्स हाई स्कूल हाल में सास्कृतिक कार्य क्रम का आयोजन किया गया था जिसमें 'वीर दुर्गादास' नाटक प्रस्तुत किया गया। जिसका निर्देशन भी एक बाल कलाकार श्री देवव्रत दीक्षित ने किया था ❀

बाल रगमच में राष्ट्र के बडे २ नेता रूचि लेते हैं यह बच्चो के सुविकास के लि अच्छा है। पं० जवाहरलाल नेहरू भी १२ जुलाई १९५४ को बालकनजी बारी के बा अभिनेताओ की दावत में उपस्थित थे तब बच्चो को सिर नीचा कर के प्रार्थना न कर के लिये सुझाव दिया था 卐

भारतीय विद्या भवन इलाहाबाद—

इसके तीन विभाग हैं (१) ललित कला विद्यालय (२) नाटक अकादमी तथा प्रकाश विभाग इस सस्था ने २६ सितम्बर १९५५ को लक्ष्मी टाकीज हॉल में कांग्रेस अध्यक्ष श्री यू० एन० ढेबर के समक्ष 'विराजबहू' नाटक प्रस्तुत किया जिसमें इस सस्थान के सचिव श्रीमति सादिक मरन ने विराज की भूमिका का निर्वाह किया था अन्य कलाकारो में श्री नीलाम्बर, कु० ललिता चटर्जी, श्री अनुकूल बनर्जी, नित्या चौधरी जितेन चटर्जी, राजा ज्युत्सी आदि थे। श्री विजय बोस ने इसका निर्देशन किया था तथ इस नाटक मे भोलानाथ की भूमिका भी की थी।

इलाहाबाद आर्टिस्ट एसोसियेशन—

इसकी स्थापना १९५५ में हुई। यह प्रयाग की प्राचीन संस्थाओ में अपना प्रमुख स्थान रखती है। प्रयाग विश्वविद्यालय के कला विभागाध्यक्ष श्री उमाशंकर कोचक और

❀ भारत १६ अगस्त १९५४
卐 ,, १३ ,, ,,

श्री के० डी० चन्द्रा के निर्देशन में इसकी स्थापना हुई इसके सचिव डा० प्रभात कुमार मडल है। इस सस्था के प्रस्तुतीकरण —

१९५५ अधा कुआ (डा० लाल)
१९५६ सरहद
१९५७ „
१९५८ कोणार्क
१९५८ साझ सवेरा
१९५९ रजत रेखा
१९६० भवर
१९६१ नये हाथ
१९६२ अजो दीदी
१९६३ कायन रण
१९६४ एन्टिगनी
१९६५ बिच्छू
१९६६ तीन फरिश्ते
१९६६ अपने अपने दाव
१९६७ वे तीन
१९६८ बेरी की बगिया
१९६८ पहचाना चेहरा
१९६८ एक और दिन
१९६९ शुतुर मुर्ग
१९७० बाकी इतिहास
१९७० बिच्छू

इस सस्था के प्रमुख कलाकार निम्न है —

श्री विनोद रस्तोगी

श्री जे० पी० वर्मा
,, वेणु कान्त व्यास
,, यूनी पीटर्स
सु श्री सुनीति ग्रोवेराय
हीरा चड्ढा (*N S-D*, स्नातक)
सुश्री शशि श्रीवास्त्व
डा० सुधीर चन्द्र
डा० बाल कृष्ण मालवीय
डा० प्रभात मण्डल
श्री सरन बली श्री वास्तव
,, कपिल देव साईं
,, मधुर कुमार
सुश्री सुधा सिन्हा
,, शोभा सिन्हा
श्री वृजकिशोर शुक्ल
,, शिव मंगल प्रसाद
,, अजय श्रीवास्तव

मार्च १९६२ मे इस सस्थाके द्वारा अजो दीदी, नाटक अभिनीत हुआ तथा रेडियो से प्रसारित भी हुआ इस सस्था के अपने दो नाटक 'पचतन्त्र' तथा 'मन के भवर' प्रकाशित भी हुए है। इसके अध्यक्ष प्रो० उदयशकर कोचक तथा सचिव डा० ज्ञानेन्द्र नाथ नाट्य सचिव सुरेशचन्द्र द्विवेदी है।

इस सस्था की विशेषता यह है कि जिस नाटक को प्रस्तुत किया जाता है उसका एक सक्षिप्त विज्ञप्ति के द्वारा दर्शको को परिचित कराया जाता है जिसमे प्रस्तुति की दृष्टि, कथानक, पूर्व कथा तथा प्रारम्भ व पात्र गत जानकारी होती है। कभी कभी भारत के सुप्रसिद्ध लेखक एवम् रग समीक्षको का भी सूक्ष्म परिचय दे दिया जाता है इसके संरक्षक श्री सुमित्रानन्दन पंत है।

सरन बली श्रीवास्तव कृत "चांदनी" नाटक १७, १८ सितम्बर १९६२ को खेला गया ❀ जिसके कथानक में मौलिकता में सन्देह उत्पन्न किया गया है नाट्य निर्देशन भी बहुत कमजोर बतलाया गया। इसमें कई दोष रह गये मसलन-पाठ प्रवक्ता द्वारा नाटक विषयक भूमिका से दर्शकों को अवगत नहीं कराया गया। अनावश्यक पात्र योजना थी। मंच सज्जा की ओर कम ध्यान था। ध्वनि प्रकाश के माध्यम से बादलों की गूंज और बिजली की चमक का भ्रम उत्पन्न किया जाना हास्यास्पद लगा। कुल मिलाकर यह एक बचकाना प्रयोग कहा गया। सीता ओबेराय, मधुर कुमार, यूनी पीटर्स, पुष्पा योगेश्वर के अभिनय स्तरीय थे किन्तु अन्य पात्र अपनी भूमिकाओं में असफल रहे यहां तक कि श्री सौरेश आलोक भी नायक सनातन की भूमिका में असफल कहे गये।

'रंगवाणी' इलाहाबाद (१९५५-६६—)

श्रीमती महादेवी वर्मा द्वारा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जन्म दिवस २३ सितम्बर १९५५ को 'रंगवाणी' संस्था का मामा विट्ठलराव वरेरकर की अध्यक्षता में सूत्रपात हुआ। इस संस्था की ओर से सर्व प्रथम नाटक श्री अमृतलाल नागर कृत 'युगावतार' खेला गया। ✠ इस संस्था के सक्रिय सदस्य श्रीमती महादेवी वर्मा, पं० सुमित्रानन्दन पंत, श्री जयशंकर सुन्दरी (गुजराती नाट्य निर्देशक) श्री शम्भुमित्रा (बंगाल मंच के निर्देशक) श्रीरामकृष्ण दास तथा श्री आद्य रंगाचार्य हैं। श्री विजय बोस ने 'युगावतार' में भारतेन्दु 'हरिश्चन्द्र' की भूमिका कर बहुत ख्याति प्राप्त की। इस नाटक में भारतेन्दु के व्यक्तित्व की एक झांकी कृष्ण भक्ति, उनकी संगीत में रुचि और जीवन के विविध कार्यों में संलग्न रहते हुए भी कविता रचना आदि को प्रदर्शित किया गया है। इस नाटक के कुल पात्र हैं छन्नूजी, मथुरादास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, भारतेन्दु की पत्नी (नेपथ्यसे). डॉ० ईश्वरीचन्द्र, मुन्शार साहब मुनीमजी, अम्बिकादत्त व्यास, कवि १, कवि-२, मल्लिका (छायापट

❀ श्री नटेश्वर—चांदनी नाटक का असफल प्रस्तुतीकरण साप्ताहिक भारत ३०-९-६२
✠ लीडर (२५-९-५५)

पर) सेठजी, सुधाकर द्विवेदी, नौकर और ब्राह्मण । इस प्रकार कुल १५ पात्रों का यह नाटक खेला तो जा चुका है किन्तु अभी तक अप्रकाशित है । इस संस्था के अन्य सक्रिय रंगकर्मियों में सर्व श्री रवीन्द्र बनर्जी, मद्याम जगन्नाथ राव, के० श्री० चन्द्रा, नलिन कुमार सिन्हा, बालकृष्ण राव, श्रीमती उमराव, डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल, बालीराम चौधरी आदि के नाम आते हैं । जितने भी कलाकारों ने भाग लिया था इनमें से अधिकतर 'नीरा' के कलाकार थे ।

नाट्य केन्द्र (१९५८-६२)

इसकी स्थापना श्री सुमित्रा नन्दन पंत की अध्यक्षताओं में सर्व श्री डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० धर्मवीर भारती, डॉ० जगदीश गुप्त, डॉ० रघुवंश, डॉ० सत्यव्रतसिन्हा, डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी, वाचस्पति पाठक आदि संस्थापकों से हुई । इसके संचालक डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल थे जिनके दिल्ली चले जाने से इसमें कुछ शैथिल्य आ गया । वैसे इस संस्था ने 'सुन्दर रस' (१९५८), 'मृच्छकटिकम्', शारदीया, आषाढ़ का एक दिन, 'इन्द्राणी', 'मादा कैक्टस', 'रक्त कमल', 'रातरानी, अंधेर नगरी' आदि कई नाटक प्रस्तुत किए हैं । इस संस्था का कार्य नाट्य प्रशिक्षण करना भी था और नाट्य प्रदर्शन भी । मालुम हुआ है कि डॉ० सत्यव्रतसिन्हा ने 'सुन्दर रस' में 'भट्टाचार्य' की भूमिका की थी जिसमें इन्हें इलाहाबाद के श्रेष्ठ कलाकार की ख्याति प्राप्त हुई थी ।

रंगशाला (१९५६-५९) इलाहाबाद—

इलाहाबाद आकाशवाणी की नाट्य निर्देशका श्रीमती विमला रैना के द्वारा स्थापित इस संस्था के द्वारा 'न्याय' तथा 'लाली साहब' नामक नाटक सितम्बर ७,८, १९५६ को खेले जा चुके हैं । इस संस्था ने तीन अंकों का नाटक 'तीन युग' भी खेला जिसके प्रथम अंक में-प्रथम युग १९२० से १९३२, द्वितीय अंक में १९३२ से १९४४ तथा तृतीय अंक १९४४ से ४७ और १९४७ से ५६ तक की गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया । 'सवेरा', खण्डहर समस्या, रोटी और कमल का फूल, अंधेरी राहें, आदि नाटक भी इस संस्थाने प्रस्तुत किए । १९५७ से १८५७ की शताब्दी के अवसर पर "वहा-

[शाह जफर" नाटक भी इस संस्था ने प्रस्तुत किया। बताया जाता है कि विमला
[रा] के नाटकों में शासन का समर्थन और उसकी योजनाओं में प्रचार प्रसार की पुट
[थी]। अतः यह संस्था एक सीमित वर्ग तक ही प्रतिष्ठित थी। श्रीमती विमला रैना
[की] मृत्युपरान्त इस संस्था में भी कुछ शिथिलता आ गयी। श्रीमती रैना स्वयं अच्छी
[ले]खिका के साथ-साथ निर्देशिका भी थी।

[७]. पी. ड्रामेटिक संघ इलाहाबाद—

इस संस्था ने २८ नवम्बर १९५७ को डॉ० राम कुमार वर्मा कृत 'फीमेल पार्ट'
[औ]र बंगला के प्रख्यात कलाकार बनफूल कृत 'नया पुराना' नाटकों का प्रदर्शन श्री विजय
[कुमा]र के निर्देशन में किया।

[८]. आर्ट्स सेन्टर (१९५८—) इलाहाबाद

पहले इस संस्था का नाम 'रंगशिल्पी' था बाद में आर्ट्स सेन्टर रख दिया गया।
[कि]न कारणों से ऐसा हुआ, इसके विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता। इसके संस्थापक
[श्री] जे. पी. वर्मा स्वयं कुशल अभिनेता एवं प्रस्तोता हैं। इस संस्था ने अब तक ढोंग,
[प्रा]इवेट सेक्रेट्री, किताबों का कफन, ये जो हुदाये, पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ, सरहद, उलट-
[फे]र, जमाना, फैसला, उसने कहा था (नाट्य रूपान्तर), एक घूंट, आकाशदीप (नाट्य
[रू]पान्तर) लोहासिंह, नेफा की एक शाम अपराधी कौन, सनोवर के फूल, अंगुलिमाल
[आ]दि नाटक खेले हैं। सर्व श्री मुरारीलाल, प्रवेशचन्द्र और विनोद रस्तोगी इसके कुशल
[रंग]कर्मी हैं। श्री बनवारीलाल श्रीवास्तव की अध्यक्षता में तथा श्री आनन्द देव गिरि
[के] संयोजन में इस संस्था ने सक्रिय काम किया है। लगभग २० से भी अधिक इसके
[प्र]स्तुतीकरण हो चुके हैं।

[९]. भारत नाट्य संस्थान (१९५८—) प्रयाग

डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा यह संस्था १९५८ से सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।
[इ]सका योगदान भी हिन्दी रंगमंच के विकास में ठीक उसी प्रकार का है जैसे राष्ट्रीय महा-

प्रतियोगिताओं में क्रमश: दो और पांच भाषाओं में नाटक प्रस्तुत हुए थे। १९७० में तीसरी प्रतियोगिता हुई। इस प्रकार यह संस्था बहुत सुचारू रूप से अपना काम चला रही है। निर्धारित शुल्क पर इस प्रतियोगिता में प्रवेश पाया जा सकता है। नाट्य प्रस्तुति के लिए ६० मिनट दिए जाते हैं। इसमें न्याय हेतु भारत के जाने माने कलाकार, आलोचक, और लेखकों को आमंत्रित किया जाता है। इस प्रकार निर्णायक समिति का गठन होता है यह संस्था यूनेस्को से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय नाटक संस्थान पेरिस का भारतीय केन्द्र है। श्री वीरेन्द्र शर्मा इसके महामन्त्री तथा श्री श्यामनाथ कक्कड़ अध्यक्ष हैं। संघ के द्वारा प्रतिवर्ष एक पत्रिका भी निकाली जाती है जो आगन्तुकों में वितरित करदी जाती है। पत्रिका का रूप उत्तरोत्तर सुन्दर होता चला जा रहा है। रंगमंच विषयक सुन्दर लेख तो इस पत्रिका में होते ही हैं साथ ही प्रस्तुत होने वाले नाटकों के सूक्ष्म कथानक भी प्रकाशित कर दिए जाते हैं। इस प्रकार अखील भारतीय नाट्य मेले का आयोजन करने का श्रेय इसी संघ को है। द्वितीय नाट्य मेले की आलोचना पटना के 'सर्च लाइट' नामक अखबार में दिनांक २४-११-६८ को प्रकाशित हुई थी उसमें हिन्दी नाटकों [illegible] स्तर को बहुत कमजोर बतलाया गया था। कुछ भी हो जो एक सूत्र में बांधने का जो कार्य हिन्दी रंग कर्मियों ने किया है वैसा अन्य किसी भाषा की संस्थाओं ने नहीं किया। इस दृष्टि से यह संघ बहुत श्रेष्ठ कार्य कर रहा है।

यह संघ वास्तव में इलाहाबाद नाट्य संस्थाओं, संघों आदि के सामूहिक गठन से निर्मित हुआ है जिसमें किसलय मंच, स्वतन्त्र नाट्य मंच, आदर्श कलामन्दिर, ड्रामेटिक आर्ट्स सेन्टर, इण्डियन कल्चरल ऐसोसिएशन, शलभ प्रगतिशील, ऐलनगंज कल्चरल ऐसोसिएशन, भरत नाट्य संस्थान, जागरण मंच, इन्टरनेशनल लिटरेरी सोसायटी, यंग इण्डियन्स, उदय नाट्य मंच एण्ड ड्रामेटिक आर्ट्स क्लब के सदस्य सम्मिलित हैं।

२६, २७. २८ अप्रेल १९६४ को प्रयाग में "प्रयाग नाट्य संघ की विचार गोष्ठी" का आयोजन हुआ। ❀ इस गोष्ठी में कुछ विचार और प्रश्न रखे गए उन पर अधिक

❀ साप्ताहिक भारत : श्री विनोद रस्तोगी, प्रयाग नाट्य संघ की विचार गोष्ठी १७-५-६४

ं पूर्ण सम्भाषण भी हुए। 'नाटक और दर्शन' तथा 'नाटककार और निर्देशक का सम्बन्ध' सम्बन्धित प्रश्नोत्तर सामने आए। गोष्ठी में सर्व श्री बालकृष्ण राव, लक्ष्मीकान्त वर्मा, शरचन्द्र वर्मा, विजय बोस, विजय देवनारायण साही, जीवनलाल गुप्त, विनोद रस्तोगी डॉ० सत्यव्रत सिन्हा, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' और श्रीमती उमाराव आदि थे।

कालिदास अकादमी—

यह प्रयाग की बहुत प्राचीन संस्था है जिसकी स्थापना श्री कृष्णदास द्वारा की गई है। इस संस्था के द्वारा कई संस्कृत और हिन्दी नाटक अभिनीत हो चुके हैं। १९६६ में इसने भी "कालिदास अकादमी बहुभाषा नाट्य समारोह" का आयोजन किया जिसमें ६ ट्य संस्थाओं ने भाग लिया। यह अखिल भारतीय नाट्यायोजन जैसे इलाहाबाद नाट्य घ करता है वैसे ही था। रंगमंच सम्बन्धित सभी कार्यों के विकास में सहायता देना र संस्था का उद्देश्य है। १९-१-६६ को इस नाट्य समारोह में कालिदास अकादमी ी ओर से 'अभिज्ञान शाकुन्तल' नाटक संस्कृत में प्रस्तुत किया गया जिसका निर्देशन ी लक्ष्मीकान्त वर्मा एवं श्री बालकृष्ण मालवीय, ने किया था। इसमें कुल ३० पात्र ।। श्री कृष्णदास रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण मालवीय, सूर्याअवस्थी, गोपाल मिश्र आदि ने इसमे भूमिकाएं अभिनीत की। कालिदास अकादमी के शोध एवं प्रकाशन विभाग द्वारा "रूपदक्ष" नामक (नाटक और रंगमंच का त्रैमासिक) पत्र भी निकलता है।

कालिदास जयन्ती समारोह समिति प्रयाग की ओर से २६-११-६६ को "अभिज्ञान शाकुन्तल" संस्कृत में तथा २७-११-६६ को हिन्दी में खेला जा चुका है। इस अकादमी के अध्यक्ष श्री श्यामनाथ कक्कड़ तथा मंत्री सूर्या अवस्थी और संयोजक श्री कृष्णदास हैं।

अजन्ता इलाहाबाद—

इस संस्था ने भी कई नाटक प्रस्तुत किए हैं। श्री कमलेश्वर विरचित "मधुरी आवाज" नाटक जो ३ अंकों का है १९-१२-५९ को खेला गया। नाटक का कथानक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक है, बीच बीच में हास्य का भी पुट है। इसी संस्था द्वारा गिरिजाकुमार माथुर का "रोटी और कमाल" भी ३,४ मई १९६१ को खेला गया है।

अभिनय, इलाहाबाद –

इस सस्था की स्थापना श्री नरेश मेहता के द्वारा हुई। इसका "खण्डित यात्राए" प्रस्तुतीकरण बहुत ही प्रशस्सनीय रहा है।

कलादर्पण, इलाहाबाद—

श्री विनोद रस्तोगी कृत "बर्फ की मीनार" नामक नाटक इस सस्था ने २८-१२-६६ को प्रात: ९ बजे पैलेस छविगृह मे प्रस्तुत किया जिसके संयोजक भारत के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री प्यारेलाल 'आवारा' थे। निर्देशक श्री रवीन्द्र वर्मा थे। इस सस्था की विशेषता यही है कि इसके नाट्य प्रेमी अधिकारों के स्थान पर कर्त्तव्यो की छीना झपटी करते हैं। इस सस्था के प्रमुख उद्देश्यहैं (१) हिन्दी रगमच का उन्नयन एव विकास करना (२) परिक्रामीमच (*Revolving Stage*) की सुविधा के साथ आधुनिकतम साज सज्जा से युक्त रग शाला की स्थापना करना (३) कला के माध्यम से राष्ट्र, समाज किम्बहुना मानवमात्र की सेवा करना (४) नाट्य साहित्य पुस्तकालय कीस्थापना करना। इस सस्थाके कलाकार श्रीमती मजुला वर्मा, श्रीमती मधु अरोडा, सर्वश्री कुमार नरेन्द्र चन्द्रमोहन रतन, सुरेन्द्र सिंह, श्री गोपाल त्रिपाठी, रवीन्द्र वर्मा आदि हैं। सरक्षक डॉ० रामकुमार वर्मा हैं, अध्यक्ष श्री प्यारेलाल आवारा, सचिव श्री बनवारीलाल, समायोजन सचिव डॉ० शिशिर रजन अरोडा और निर्देशक श्री कुमार नरेन्द्र हैं।

नाट्य समिति इलाहाबाद—

इस सस्था के द्वारा एक अग्रेजी नाटक और एक हिन्दी नाटक "कवि और कल्पना" प्रस्तुत हुए। इसके अभिनेताओ मे अतिरजना का आधिक्य था। इसम श्री विजय बोस की भूमिका फिर भी प्रशस्मनीय थी। ❀

अधिकतर नाट्य प्रस्तुतीकरण इलाहाबाद मे सिनेमा घरो मे होते थे। जिनमे भी

❀ *Patrika 5-4-68 : Natya Samiti Presents Slick Performance On world Theatre Day*

प्रमुख "पैलेस सिनेमा" लक्ष्मी टाकीज-हॉल, रेलवे इन्स्टीट्यूट हॉल, विश्वविद्यालीय-वाणीठ, प्रो० टी० एम० हॉल आदि थे। नाटक दुपहर को ३ बजे प्रारम्भ होते।※ कभी-कभी नाट्य संस्थाओं के अतिरिक्त भी दूसरी संस्थाएं वार्षिकोत्सव में अच्छे नाटक प्रस्तुत कर देती हैं जैसे 'साहित्य एवं साधना केन्द्र' ने "अरुण शलभ", 'उसने कहा था' (राजेन्द्र शर्मा कृत हिन्दी नाट्य रूपान्तर) तथा डॉ० रामकुमार वर्मा कृत 'पृथ्वी का स्वर्ग' आदि नाटक प्रस्तुत किए। यहां के प्रमुख कलाकार श्री विजय बोस, श्री विनोद रस्तोगी तथा राज जोशी आदि हैं।

उपर्युक्त संस्थाओं के अतिरिक्त भी इलाहाबाद में "कर्मचारी रंगमंच" "अध्यापक मंच", इण्डियन कल्चरल सोसायटी, लोक रंगमंच, त्रिमूर्ति.उदय नाट्य मंच आदि संस्थाओं ने भी कई नाट्य प्रस्तुतीकरण किए हैं।



※ भारत (८.१२.५३;१६.१२.५३) तथा अमृत बाजार पत्रिका ११.१२.५३

दिल्ली की नाट्य संस्थाएं

लिटिल थियेटर ग्रुप—

यह नाट्य संस्थान पाश्चात्य नाटकों से अधिक प्रभावित है। इसने कुछ नाटक गोल मंच और आगे बढ़े हुए मंच पर ही प्रस्तुत किए हैं ❀ इसने हिन्दी प्रदर्शन के लिए सहकारी आधार पर एक अर्द्ध व्यवसायी मंडली बनाई है जो भारतीय एवं विदेशीय रूपान्तरित नाटक खेलती है। 'अमानत' नाटक इस संस्था के द्वारा खेला जा चुका है 卐 इसी संस्था के द्वारा श्री मनोजकुमार घोष कृत "अज्ञातक" (बंगला प्रामेल) का हिन्दी अनुवाद श्री परेशदास सोम चौधरी द्वारा प्रदर्शित किया गया जिसके निदेशक परेशदास स्वयं थे।● इस नाटक के मुख्य कलाकार वीना गौर, एवं जीत शर्मा थे। इस संस्था के अभिनेता प्रोम्टिंग का बहुत तेज प्रयोग करते हैं।

अभियान—

विजय तेन्दुलकर कृत 'पंछी ऐसे आते हैं' का सरोजिनी वर्मा द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद इस संस्था के श्री राजेन्द्रनाथ द्वारा निर्देशित हुआ। इसके कलाकार श्याम अरोड़ा, सुधा चोपड़ा, चड्ढा, अनिल सहगल, पल्लवी मेहता आदि थे। इस संस्था द्वारा पहले बादल सरकार कृत 'सारीरात' का डॉ० प्रतिभा अग्रवाल के द्वारा किया गया हिन्दी नाट्यानुवाद राजेन्द्रनाथ के निदेशन में खेला गया जिसके प्रमुख कलाकार श्री टी० पी० जैन (वृद्ध), सुधा चौपड़ा (स्त्री) तथा श्याम अरोड़ा (पुरुष) थे। दिल्ली साहित्य कला परिषद् के द्वितीय नाट्य समारोह में इसका 'सारीरात' प्रस्तुतीकरण द्वितीय घोषित हुआ। ◐ यह संस्था प्रतिवर्ष विशिष्ट नाटक प्रस्तुत करती है। बादल सरकार कृत 'पगला घोड़ा' भी इसका विशिष्ट प्रस्तुतीकरण था।

❀ श्री बलवन्तगार्गी : रंगमंच, पृ० १८१

卐 श्री नेमिचन्द्र जैन रंग दर्शन, पृ० २१४

● धर्मयुग (२-५-७१)

◐ साप्ताहिक हिन्दुस्तान (२७ जून १९७१)

नया थियेटर—

यह संस्था लोक कलाकारों को लेकर आशु प्रयोग (इम्प्रोवाइजेशन) करती है। 'जमादारिन', चपरासी, खेरी खेरा, कागज का पुतला आदि ऐसे ही प्रयोग हैं। इस संस्था के प्रमुख कलाकार हैं सर्वश्री लालूराम, भुलावाराम, ठाकुरराम, बाबूदास बोहरा और हबीब तनवीर। इस संस्था के नाट्य निर्देशक श्री रोशनसेठ हैं। श्री हबीब तनवीर भारत विख्यात अभिनेता एवं निर्देशक हैं।

यात्रिक (इण्डियन नेशनल थियेटर अथवा नाट्यकुटी)

सई परांजपे कृत हिन्दी मालिश "एकतमाशा अच्छा खासा" श्री अरुण जोगलेकर के निर्देशन में अभिनीत हो चुका है। यह संस्था टिकट लगाकर नाटक खेलती है। इसके द्वारा "अंधेरा होने दो" तथा किश्वर सुल्तान कृत एकांकी "सलीब पर मरियम" भी खेले जा चुके हैं। इस संस्था के नाटक-चुनाव में दो उद्देश्य रहते हैं—(१) नाटक प्रयोगशील हो (२) नाटक साहसिक, रोमांचक और सनसनी पूर्ण हो। इसीलिए इसने बेट अटिल जर्क का हिन्दुस्तानी रूपांतर 'अन्धेरा होने दो' चुना। डॉ० लाल के मतानुसार ❀ यह नाटक चयन विशिष्ट दर्शक वर्ग को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। यह नाटक न रंगमंचीय प्रयोग युक्त है न 'नये' का विशेषण इसे प्राप्त है। यह केवल सफलता से खेला जाने वाला नाटक है। मोहन महर्षि भी इससे सम्बन्धित हैं। श्री नेमिचन्द्र जैन के कथनानुसार 卐 इस संस्था में सभी प्रशिक्षित अभिनेता हैं और इसके हिन्दी-अंग्रेजी प्रस्तुतीकरणों का स्तर ठीक है।

दिशांतर—

'हिकारत से भरे हुए अंग्रेजी और पश्चिम के नकलचियों के भाव से अलग यह दिल्ली की 'युवा और जीवन्त संस्था है। ● इस संस्था के सदस्य ओम शिवपुरी, राम-

❀ नवभारत टाइम्स (२९-८-६९)

卐 रंगदर्शन (विशेषांक), पृ० २१४

● साप्ताहिक हिन्दुस्तान:—(८-११-७०) दिशान्तर, पृ० ४५

गोपाल बजाज आदि १९६५ में N S D से स्नातक बनकर निकले उसके बाद 'सं
और 'यात्रिक' जैसी संस्थाओं के पास जाकर नाटक मेल कर जीविका-साधन जुटाने
प्रेरणा प्राप्त की जैसा कि इनके लिए लिखा है-"दिशान्तर के संस्थापक सदस्यों ने सुरक्ष
और अनिश्चितता की स्थिति में 'अभियान' और 'यात्रिक' जैसी संस्थाओं में शामिल ह
की कोशिश की थी पर वहां उन्हें साहित्यिक सद्भावना के साथ-साथ आर्थिक चातुर्य
ही भरपूर स्वाद मिला।" अतः इनके कलाकार रुचि और जीवन दोनों से जुड़े हुए
यह रुचि इनकी युवावस्था की नहीं है बचपन से है। ओम शिवपुरी का सांस्कृतिक-जी
के प्रति लगाव जोधपुर के हिन्दी रंगमंच से प्राप्त हुआ। वे जोधपुर में बहुत समय तक
और जब तक रहे तब तक विश्वविद्यालयीय स्तर के नाटकों का खूब आयोजन किया। अ
उनकी नाट्य प्रतिभा जोधपुर की देन कही जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। धीरे-धी
इस प्रतिभा ने इतना विकास किया कि इनकी 'दिशान्तर' आज भारत में सुप्रसिद्ध स्थ
रखती है। इस सुप्रसिद्धि का श्रेय केवल ओम शिवपुरी को ही नहीं है अपितु श्रीम
सुधा शिवपुरी (गुप्तशर्मा) को भी है जिन्होंने इन्हें प्रारम्भ से इस पुनीत कार्य में अप
नाट्य प्रतिभा से पूर्ण रूपेण सहयोग दिया है।

१९७० में ४ नाटकों का दस दिवसीय समारोह 'त्रिवेणी कला संगम के खुले
मंच पर हुआ। ये चार नाटक 'आधे अधूरे', 'बिच्छु', 'त्रिशंकु', "खामोश अदालत जा
है" थे। श्री ओम शिवपुरी के निर्देशन में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कहानी "लड़ाई
का विनोद चतुर्वेदी कृत नाट्य रूपान्तर भी प्रस्तुत किया गया। इसमें ५१ छोटे ब
बच्चों ने भाग लिया। इसका कथन सत्य के लिए संघर्ष की कहानी पर आधारित है
इसमें स्थिति के व्यंग्य को गहराई देने के लिए गीतों का भी प्रयोग किया गया था
दिल्ली साहित्य कला परिषद् के द्वितीय नाटक समारोह (१९ मई से ९ जून १९७
तक) में आयोजित दिशान्तर का "हिरोशिमा" नाटक प्रथम घोषित हुआ।*
दिशान्तर की ओर से ४ नाटक—आधे अधूरे, कंजूस' खामोश अदालत जारी
और त्रिशंकु भी खेले गये। कंजूस एक मुसलमानी कामदी है। इसमें मुसलमान

* साप्ताहिक हिन्दुस्तान (२७-६-७१) एक बड़े काम का साधारण प्रारंभ पृ० ५१

घर का सा वातावरण बनाने के लिए वैसा ही दृश्यबंध (मेहराबों, हुक्का, उगालदान, जाली- दार चौखटों, चिकों आदि) का प्रबन्ध किया गया। श्रोम शिवपुरी ने मिर्जा सखावत बेग की भूमिका की जो बहुत प्रशंसा का विषय बनी।॥

इन नाटकों में भाग लेने वाले कलाकार सर्वश्री ओमशिवपुरी, कमलाकर सोन टक्के, सुधाशिवपुरी, रामगोपाल बजाज, विश्व मोहन बडोला, वामदेव प्रसाद सिन्हा, अभिराम, बी० के० गिरी, प्रेमा, व० व० कारन्त शंकर सायल, अनिल सहगल, अनुराधा कपूर, सुषमा शर्मा, नरेश सूरी, आनन्द गुप्ता, राजन साहनी आदि थे। मीना विलियम्स, चमन बग्गा, कारन्थ, दिनेश ठाकुर आदि भी इस संस्था के जाने माने कलाकार हैं। श्री शिवपुरी ने बताया कि आज तक उन्होंने आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे, अंधायुग, तुगलक, खामोश अदालत जारी है, एवं इन्द्रजित, तीसवी शताब्दि, सुनो- जनमेजय बादलगाबायेकृत कभी चित कभी पट, ताराशंकर बंदोपाध्याय कृत 'गणदेवता', तथा कुछ अंग्रेजी नाटक 'किंगलियर', 'दी फादर,' और 'वेटिंग फॉर गोदो आदि खेले जा चुके हैं।

संवाद—

यह दिल्ली की पुरानी एवं व्यावसायिक स्तर की संस्था है। यह अपने नाट्य प्रदर्शन हमेशा टिकट लगाकर करती है। इसमें दिल्ली के सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित कला- कार हैं। ओमशिवपुरी जैसे प्रसिद्ध कलाकारों ने 'संवाद' में रहकर बहुत कुछ ज्ञानार्जन किया है। इस संस्था के द्वारा डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल का 'मि० अभिमन्यु' जनवरी १९६९ में खेला जा चुका है। इसके अन्य प्रसिद्ध कलाकारों में माधवी, दिनेश और राय- जादा के नाम प्रमुख हैं।

रंगशाला—

इस संस्था के द्वारा त्रिवेणी गार्डन थियेटर में राजेन्द्रकुमार शर्मा द्वारा लिखित ३ प्रहसन 'एक से बढ़कर एक' 'एक राग दो स्वर' और 'कायाकल्प' खेले जा चुके हैं।

॥ धर्मयुग (१८-१०-७०), दिगन्तर का नाट्य समारोह, पृ० २१

ओर से अभिनीत करवाया जिसमें राजारामजी ने अमर सिंह, चन्द्रधर शर्मा गुलेरीके भतीजे स्व० राजगुरु रमाशंकर गुलेरी ने गोविन्द सिंह का अभिनय किया। श्री राजराम ही इस संस्था के प्रमुख अभिनेता थे। इस संस्था के द्वारा प्रहसन भी खेले जाते थे इन प्रहसनों में बीरबल के लतीफे जुन जाते और श्री राजाराम नागर तथा श्री रमाशंकर गुलेरी इन्हें प्रस्तुत करते। श्री गुलेरी मिर्जापुरी (देहाती वेषभूषा) में मंच पर उतरे दर्शक वृन्द इनके प्रहसन देख-देख कर हसते हसते लोट पोट हो जाते थे। इस क्लब की अंतिम प्रस्तुति १६२१ में 'कबीर' नामक नाटक की थी। इसके बाद अभिनेता एवं सदस्यगण "प्रबोधिनी परिषद" की ओर आकृष्ट हुए अतः यह क्लब बाद में समाप्त हो गया।

नक्षत्र अन्तर्राष्ट्रीय (१९६६-अद्यावधि) लखनऊ

रंगमंच के पुनरुत्थान एवं उन्नयन हेतु इस संस्था का गठन हुआ जिसका उद्देश्य स्थायी रंगमंच की स्थापना तथा रंग प्रेमियों को संगठित करना है। इसका प्रमुख कार्य नाटक अभिनीत करना, नाट्य शिल्प एवं रंगशिल्प हेतु नाट्य प्रयोग करते रहना है। उत्तर प्रदेश के इतिहास के सर्वेक्षण एवं संकलन के ध्येय से इस संस्था द्वारा भारतेन्दु नाट्य विद्यापीठ की स्थापना की गई है। संस्था के संचालक श्री शरद नागर हैं। इसके अन्य रंगकर्मियों में सर्वश्री कुमुद नागर, जयदेव शर्मा 'कमल' उर्मिल कुमार थपलियाल, ज्ञानेन्द्र अवस्थी, सत्येन्द्र शर्मा, प्रदीप, विनोद कुमार चटर्जी, कुमारी विजय ठाकुर आर के गुप्ता, कुमारी प्रारती, इकबाल मजीद, शंकर सिंह, डा० गिरीश तायल आदि हैं। इस संस्था के पनपते समय श्री भगवती चरण वर्मा भी इसके अध्यक्ष रहे हैं। इस संस्था के द्वारा 'भारतेन्दु रंगमंच एवं अनुसंधान केन्द्र" भी स्थापित किया गया है जिसके संयोजक डॉ० मब्बू लाल सुल्तानिया 'अज्ञात' हैं तथा सचिव श्री शरद नागर हैं।

२५-१२-६६ को लखनऊ के रवीन्द्रालय में श्री संघमित्रा (बंगला नाट्य संस्था के

कर्णधार) कृत 'काचनरंग' (श्री नेमिचन्द्र जैन द्वारा नाट्य रूपान्तर) नाटक इस संस्था के उद्घाटन समारोह पर सर्व प्रथम खेला गया। इस की द्वितीय प्रस्तुति जगदीश चन्द्र माथुर कृत "कोणार्क" थी। यह नाटक १९६८ में खेला गया था। राज्य संगीत नाटक अकादमी (उत्तर प्रदेश नाट्य भारती) ने इस संस्था को बहुत सी सुविधाएं प्रदान की हैं।

नाट्य शिल्पी (उत्तर रेल्वे-मंच)

इसके सचिव श्री के के खन्ना हैं। २४-१२-६७ को उलझन नाटक इस संस्थाने खेला। 'प्रेम तेरा रंग मेरा' श्री किशन खन्ना एव मनहर पुरी के निदेशन मे १४-९-६९ को रवीन्द्रालय मे खेला गया। यही संस्था टिकट लगाकर अपने नाट्य आयोजन करती है।

विविध कला संगम

श्री आर गोविन्द एव श्रीमती माया गोविन्द के प्रयत्नो द्वारा इस संस्था की स्थापना जनवरी १९६९ म हुई। फरवरी १९६९ म इनके द्वारा "२० बरस का दूल्हा दुल्हन ६० की" प्रहसन प्रस्तुत किया गया जिसमें ३५ पात्र थे। इस संस्था के द्वारा "म्यूजीकल नाइट" कार्यक्रम भी दिया जा चुका है। अब यह संस्था मतभेद के कारण बंद पडी है। श्री एव श्रीमती गोविन्द ने इस संस्था की ओर से कई नाटक प्रस्तुत-किए हैं। श्रीमती माया गोविन्द लखनऊ की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री हैं। लखनऊ मे छोटी मोटी ऐसी कई संस्थाएं हैं जो यत्रतत्र नाटक प्रस्तुत करती रहती है उनमे से कुछ का पता अवश्य लगा है।

महाराष्ट्र समाज, लखनऊ

इस संस्था के द्वारा ३१-८-६८ को रवीन्द्रालय मे 'कस्तूरी मृग' खेला गया। यह संस्था भी लखनऊ की बहुत पुरानी संस्था है। या मराठी संस्था है किन्तु हिन्दी नाटकों

कानपुर की हिन्दी नाट्य संस्थाएं

भारतेन्दु मंडल—

१८७४ ई० मे कानपुर मे 'सत्य हरिश्चन्द्र' तथा "वैदिकी हिन्सा हिन्सा न भवति" की प्रस्तुतियो मे हिन्दी रग-परम्परा की वहां प्रतिष्ठा हो चुकी थी। अत कानपुर मे हिन्दी रगमच की नीव डालने वाले सर्व प्रथम व्यक्ति पं० रामनारायण त्रिपाठी प्रभाकर उर्फ लल्लू मास्टर ही थे। उनके सहयोगी बाबू बिहारीलाल 'परोपकारी' थे। इन दो नाटको के बाद त्रिपाठी जी ने "रामाभिषेक" नाटक और प्रस्तुत किया इसके बाद वे गोरखपुर चले गये। ✻ इस मडल के अन्य प्रमुख रगकर्मियो मे प० प्रताप नारायण मिश्र का नाम भी अग्रगण्य है जिन्हे नाट्य प्रस्तुतीकरण मे रुचि तो थी ही, नाट्य समीक्षा लिखने मे भी दक्षता थी। अस्तु वे उस मडल के साहित्यिक नेता कहे जाते थे। "ब्राह्मण" नामक पत्र मे श्री रामनारायण त्रिपाठी की नाट्यालोचनाए प्रकाशित होती थी। बतलाया जाता है कि मिश्रजी के ही अथक प्रयत्नों से तीन नाटक—'नीलदेवी' और अन्धेर नगरी' (१८८२ ई०) तथा "भारत दुर्दशा" (१८८५ ई०) मे खेले गये, उसके बाद यह सस्था भी निष्क्रिय हो गयी। 卐

भारत एन्टरटेनमेन्ट क्लब (१८८५ ई०—)

इस सस्था के सस्थापको की जानकारी प्राप्त नही हो सकी है। वैसे यह सस्था उर्दू नाटक प्रस्तुत किया करती थी किन्तु कभी कभी हिन्दी नाटको के भी खेले जाने के प्रमाण मिले हैं जिनमे 'भारत दुर्दशा' नामक नाटक का उल्लेख मिलता है। ● किन्

✻ डॉ० सोमनाथ गुप्त हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास चौथा सस्करण पृ ११६-१२०

卐 सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा जानकी मगल नाटक पृ ३४-३५

● डा० सोमनाथ गुप्त हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास चौथा सस्करण, ११६-१२०

इनके सदस्यों मे आपसी विरोध उत्पन्न हो जाने के कारण यह संस्था १८८६ ई० मे क्रमश "एम ए क्लब" और श्री भारत मनोरंजनी सभा (जिसे डॉ. सोमनाथ गुप्त ने 'भारत रजनी सभा' कहा है) नामक दो संस्थाओं मे विभाजित हो गयी। अत. इस संस्था की महत्ता केवल इसीलिए है कि इसने दो अन्य हिन्दी संस्थाओं को जन्म दिया। बतलाया जाता है कि "एम ए. क्लब" (१८८६) ने "गोरक्षा" विषयक नाटक खेल कर बड़ी प्रसिद्धि पायी थी।

श्री भारत मनोरंजनी सभा (१८८६ ई०)—

प० प्रतापनारायण मिश्र, बाबू पवन लाल, बाबू राधेश्याम, मुन्शी राधेलाल, नारायण प्रसाद अरोड़ा और गोवर्धन खन्ना इस संस्था के प्रमुख रंगकर्मी थे। इस संस्था की ओर से मिश्रजी का 'कलि प्रवेश' और 'हठी हमीर', प० देवकी नदन त्रिपाठी कृत "जयनार सिंह की" तथा प० अम्बिकादत्त व्यास का "गौसंकट" नामक नाटक अभिनीत किए गए। इन प्रस्तुतियों के बारे में मिश्रजी के "ब्राह्मण" में सूचनाएं प्रकाशित हुई हैं। मिश्रजी स्वयं बड़े अच्छे अभिनेता थे। उन्होंने 'घसियारे' की तथा 'मल्लाह' की भूमिकाओं को बड़े कौशल के साथ निभाया, अत मिश्रजी का योगदान हिन्दी रंगमंच के लिए दो रूपों में प्राप्त होता है—(१) साहित्यिक विभूति के रूप में तथा—(२) स्वयं अभिनेता के रूप में। अभिनय क्षेत्र मे इनके मूंछ मुडाने का किस्सा तो बहुत प्रचलित है ही, इनके बाद श्रीरामदेवी प्रसाद का नाम भी हिन्दी रंग मंच के प्रमुख रंगकर्मियों में गिना जाता है जिन्होंने २-१२-१८९६ मे "रसिक मंडल" की स्थापना की जिसके विषय में अधिक विवरण उपलब्ध नही होता।

इसी प्रकार दो अन्य संस्थाएं "विक्रम नाट्य समिति" (जिसके रंगकर्मी श्रीनारायण प्रसाद अरोड़ा, गोवर्धन खन्ना ,और बाबूराम जैन आदि थे) तथा "विजय नाट्य समिति" हैं जिनके विषय में अधिक विवरण अप्राप्य है।

भारत नाट्य समिति—

श्रीराम प्रसाद मिश्र द्वारा सम्पादित "महाराणा राजसिंह" कानपुर मे इस संस्था के

द्वारा आठ बार खेला गया। इस संस्था के द्वारा १९१६ ई० में 'सन्मित्र' के प्रदर्शन होने का उल्लेख भी मिलता है। बतलाया जाता है कि दो संस्थाओं ने मिल कर इस नाटक को खेला था। इसमें भाग लेने वाले कलाकार सर्व श्री बाबू नारायण प्रसाद अरोड़ा कुंवर कृष्ण कौल और रघुनाथ वाजपेयी प्रमुख थे।❀

कैलाश नाट्य समिति—

यह संस्था प्रतिवर्ष विजय दसमी पर नाटक खेला करती थी। बतलाया जाता है कि इसमें स्त्री पात्रों की भूमिका युवक कलाकार करते थे। मंच का रचना विधान पारसी शैली का था। इस संस्था के मंच पर बंगला नाटक भी प्रस्तुत होते थे। इस समिति की आधुनिक गतिविधियों के बारे में पूर्ण जानकारी अप्राप्य है।

राज महल नाटक मंडली— (२० वीं शताब्दि के प्रथम दशक से १९१५ तक)

इस मंडली की स्थापना ईश्वरी प्रसाद वाजपेयी के द्वारा हुई थी।卐 इसके निर्देशक निजाम तथा मुहम्मद हुसैन रामपुरी थे। मंच शिल्पी थी कन्हैया लाल दुबे (दादा भाई नूतन जी रतनजी ठूठी नाटक मंडली बम्बई वाले थे) यह संस्था पूर्ण रूप से पारसी तकनीक से प्रभावित थी और कभी कभी हिन्दी के नाटक भी प्रस्तुत कर दिया करती थी। इस संस्था द्वारा तालिब कृत 'सत्यहरिश्चन्द्र' अहसन कृत चन्द्रावली, बकावली और मुहब्बत का फूल नारायण प्रसाद बेताब कृत जहरी सांप, महाभारत, आगा हश्र कश्मीरी कृत 'भक्त सूरदास' सैदे हविस, असीरे हीर्स, सफेद खून, ख्वाबे हस्ती और वनदेवी तथा औलाद अली कृत गुल बकावली, नैयरकृत वतन, शीरीफरहाद, 'इन्दरसभा' आदि खेले। १९१५ के

❀ सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा जानकी मंगल नाटक, पृ ३७

卐 डॉ अज्ञात–पारसी हिन्दी रंगमंच नागरी पत्रिका (अंक ६७, वर्ष १, मार्च–अप्रैल ६८) पृ ११०

ासपास इस कम्पनी ने कानपुर के आसपास के शहरों में जाकर भी नाटक खेले। बाद में ह कम्पनी राम महल थियेटर मैजिस्टिक टाकीज में बदल गयी जिसे अब नवरंग टाकीज ाहा जाता है।

नरसी थियेट्रीकल कं. (अलवर१९४२—)

मास्टर फिदा हुसैन (प्रख्यात नाम प्रेम शंकर 'नरसी') ने इस संस्था की स्थापना की थी। इस संस्था के द्वारा कन्हैया लाल कातिल कृत 'भक्त नरसी मेहता' मुंशी शर्मा कृत मुझे देखो, लैलामजनूं और प० वृद्धिचन्द्र अग्रवाल 'मधुर' कृत 'बहुत सोए' नाटक खेले गये। अगस्त १९४२ में यह कम्पनी 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के कारण बन्द हो गयी।%

नूतन कला मंदिर (१९४५—५०)

श्री विनोद रस्तोगी (अब ड्रामाप्रोड्यूसर आकाशवाणी इलाहाबाद) के द्वारा संस्थापित इस संस्था ने "हिन्दी एकांकी महोत्सव" का आयोजन किया। इसमें श्री रस्तोगी लिखित ५ एकांकी नाटकों का प्रदर्शन किया गया। श्री रस्तोगी ने आजादी के बाद, भ्रष्टाचार जैसी प्रस्तुतियों को ब्राडगस्मसेट पर खेला। बतलाया जाता है कि इस संस्था के पहले वहाँ छुटपुट संस्थाएं थी, इन्होंने इन्हें एक रूप देकर झगड़ा समाप्त किया। इस संस्था के द्वारा कृष्ण चन्द्र कृत "कुत्ते की मौत" नाटक भी प्रस्तुत हो चुका है।

भारतीय कला मंदिर—

डॉ० मन्नूलाल मुल्तानिया 'अज्ञात' के द्वारा यह संस्था स्थापित की गयी। इसके रंगकर्मियों ने डॉ० अज्ञात कृत नौका तूफान और घाटी तथा, डॉ० लाल कृत 'मादा कैक्टस'

% डॉ० अज्ञात पारसी हिन्दी रंगमंच- नागरी पत्रिका (अंक ६-७ वर्ष १ मार्च-अप्रैल १९६८) पृ १११

नाटक मेले इस संस्था के द्वारा बिना परदो के दृश्यबंधो पर भी नाटक प्रस्तुत किए गए थे इसके द्वारा ध्वनि संकेतों का एक विशेष प्रयोग भी हुआ था । डॉ० प्रभात के लखनऊ च जाने के बाद इस संस्था मे कुछ शैथिल्य आ गया ।

काडा (कानपुर अकाडेमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट्स)—

इसकी स्थापना लगभग १९६० में हुई । नाट्य निदेशक और प्रसिद्ध लेख श्री ज्ञानदेव अग्निहोत्री के निदेशन मे ११ सितम्बर १९६० मे विनोद रस्तोगी कृत "न हाथ" का मचन हुआ । इसके प्रमुख कलाकारों में श्री हरुण रशीद, रेणुबाला, राजे कौर, डेनिस बर्लमेन्ट, प्रभा मलिक, मो० इब्राहिमखॉन, प्रेमलता दास, रोशन अरोडा, वि कुमार शुक्ला, अफसर अली आदि हैं । ९–२–६४ को कानपुर म ज्ञानदेव अग्निहो विरचित "नेफा की एक शाम" नाटक इस संस्था के द्वारा प्रस्तुत होकर बहुचर्चित हुआ यह २५ वॉ नाटक था जो काडा के रजत जयन्ती समारोह मे प्रस्तुत किया गया था यह नाटक चीनी-आक्रमण मे कथानक को लेकर दो अ का मे लिखा गया है । १९६४ ६५ मे इस संस्था का नाम पलटकर "नाट्य भारती" रख दिया गया । काडा व अध्यक्षा डॉ० श्रीमती प्रमिला गोखले थी ।

दी एम्बेसेडर्स (१९६२ ई०-)

इसके उद्घाटन के समय 'नयी समस्या' और 'दियाबुझ गया' नामक नाटक खे गए । १९६२ की नाट्य गोष्ठि मे इस संस्था ने श्री रामनारायण लाल कृत नौटं "माधवानन्द कामकन्दला" प्रस्तुत की । काडा और नाट्य भारती के निदेशक श्री ज्ञानदे अग्निहोत्री ने दी एम्बेसेडर्स के लिए डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल कृत "दपण" नाटक क निदेशन सर्व प्रथम किया । इसम कविता रोहतगी, कमल कपूर, ममता, जयशंक सिकदर, सुरेन्द्र तिवारी, राकेशवर्मा, भारत भूषण आदि कलाकर थे । इसके प्र रगकर्मी सर्व श्री अटलमूर्ति, सिद्धेश्वर अवस्थी, राधेश्याम दीक्षित आदि थे । इस संस्थ की विशेषता यह थी कि पूर्व संस्कृत काल से चली आ रही पारम्परिक पूर्व रग-पद्धि

ा पूर्ण रुप से निर्वाह करती थी । यह पूर्वरग पद्धति मागलिकता का प्रतीक मानी जाती । "जाडे की एक रात' नाटक भी इस सस्था के द्वारा प्रस्तुत किया गया । के वी न्द्रा का "सरहद" (पूर्णांकी नाटक) इस सस्था का छठा प्रस्तुतीकरण था जिसका नर्देशन श्री वी एन सेठ ने किया था । इसमे भाग लेने वाले प्रमुख कलाकार और रगकर्मी सर्वश्री भास्कर दत्त, बनेश्वर शर्मा, विजय कुमार, सत्य किशोर, सतोष कुमार आदि थे । सगीतज्ञ थे श्री ए के मित्र तथा शेखर बनर्जी । श्री सत्य मूर्ती इसके अवैतनिक महामत्री थे ।

इस सस्था की यह भी एक विशेषता है कि इसके पास सेटसज्जक वेषभूषाकार, रुप सज्जकार ध्वनि एव प्रकाश सयोजक आदि सभी विशेषज्ञ थे १६६४-६५ में इस सस्था का नाम बदल कर "दर्पण" रख दिया गया ।

दर्पण—

दी ऐम्बेसेडर्स का बदला हुआ नाम 'दर्पण' है । इस सस्था के सभापति श्री एस एल भटल और महामत्री प्रोफेसर सत्यमूर्ती हैं । इस सस्था के द्वारा डॉ० लाल का 'मिस्टर अभिमन्यु' श्री राकेशवर्मा के निदेशन मे प्रस्तुत हुआ जिसके सयोजक श्री विजय स्वरुप गुप्ता और निर्माता प्रा सत्य मूर्ती थे ।

नाट्य भारती—

'जाडा' सस्था का नाम बदलकर 'नाट्य भारती' रख दिया गया । १०-१०-६५ को ज्ञान देव अग्निहोत्री विरचित 'वतन की आबरु' (पाकिस्तानी आक्रमण पर आधारित नाटक) इस सस्था के द्वारा खेला गया । यह दो अकी का नाटक है ।

इस सस्था के अध्यक्ष श्री तारक बन्धु भौमिक हैं तथा श्री विजय गुप्ता मत्री । इसके अन्य प्रमुख अभिनेताओ मे सर्व श्री राधेश्याम दीक्षित नेहाल सिद्दीकी, नरेन्द्र सचदेव और आनन्द बल्लभ त्रिपाठी के नाम उल्लेखनीय हैं ।

कानपुर के पुराने रंगकर्मियो मे श्री विश्वनाथ त्रिपाठी 'विश्व' का नाम बहुचर्चित है जिन्होने 'हमारा समाज' 'हिन्दी हिन्दु-हिन्दुस्तान' और 'पहला कदम' नाटक लिखे और मचस्त किए । इसके अतिरिक्त द्वितीय चिरस्मरणीय नाम श्री अहमद चाचा का है जिन्होने हिन्दी रगमच के विकास हेतु अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है । कानपुर में इनके समय मे 'परदो' का स्थान 'सेट' लेने लग गए थे । परदो का प्रचलन समाप्त प्राय हो गया था और इसी तरह ऐतिहासिक पौराणिक नाटको की जगह यथार्थवादी सामाजिक नाटको ने ले लिया था ।



बम्बई की नाट्य संस्थाएं

बम्बई की नाट्य संस्थाएं

पृथ्वी थियेटर्स (जनवरी १९४४-मई १९६०)

श्री पृथ्वीराज ने ८ वर्ष की उम्र में नाटक खेलना आरम्भ किया। उनका प्रथम नाटक 'सत्य हरिश्चन्द्र' था। जिसमें उन्होंने 'गणपति' की भूमिका की थी जिसमें वे शैव्या के पास खबर पहुँचाते हैं कि रोहिताश्व को सर्प ने काट खाया है। बस इतनी सी भूमिका ने दर्शकों को विमुग्ध कर लिया था। उनकी यह नाट्य रुचि इतनी बढ़ी कि बाद में उन्होंने कई नाटकों में भाग लिया। यहाँ तक कि वे फिल्मों में भी काम करने लगे किन्तु उनका लक्ष्य फिल्म नहीं रंग मंच था। अत १५ जनवरी १९४४ को उन्होंने 'पृथ्वी थियेटर्स' की स्थापना की। इसमें उनका उद्देश्य आम जनता को शिक्षित व राष्ट्र के लिए जागरूक करना था।

पृथ्वी थियेटर्स का प्रथम नाटक 'शकुन्तला' और बाद में दीवार, पठान, गद्दार, आहुति पैसा और किसान खेले गये। इन्हीं नाटकों को लेकर वे भारत के कोने-कोने में गये। इनका अपना कोई मंच नहीं था। छोटे-मोटे १५० कलाकार इस पृथ्वी थियेटर्स में काम करते थे। २५ हजार रुपये प्रति माह इनका खर्च था। उन्होंने अपने नाट्य प्रदर्शनों से १० लाख रुपया इकट्ठा करके देश की अन्य संस्थाओं को सेवार्थ दिया था। ❀ पृथ्वी थियेटर्स के सभी कलाकारों को चैक में एक साथ तनख्वाह मिलती थी जो कलाकार थियेटर छोड़कर चला जाता उसे १) रु- मनीआर्डर प्रतिमाह भेजा जाता था जो पृथ्वी थियेटर्स की ओर से तुच्छ भेंट थी।

❀ श्री ओंकार शरद पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ, पृ ९

श्री पृथ्वीराज ड्राइंग रूम सेट पर अपने नाटक किया करते थे और मंच पर परिश्रम आदि अधिक अच्छे लगते थे। उन्हें फिल्म उद्योग वाले सभी 'पापाजी' कहा करते थे। सौभाग्य से मैं भी उनके सम्पर्क मे आया और उनके दर्शन कर चमत्कृत हो गया। मैं उनके यहाँ ५–७ दिन तक बराबर आया गया उन्होने खूब इज्जत की। वे प्रत्येक अध्येता को और साहित्यिक व्यक्ति की सेवा करने मे अपने आपको अहोभागी समझते थे। उन्होने कहा कि आर्थिक कठिनाई के कारण उन्हें अपना थियेटर १९६० मे बन्द कर देना पड़ा। उन्होने कहा कि १९७७ मे वे एक बार फिर सम्पूर्ण भारत मे अपनी संस्था बनाकर नाट्य आयोजन करेंगे। किन्तु ईश्वर को यह मन्जूर नहीं था अत बीच में ही उनका देहान्त हो गया जिससे फिल्म जगत के साथ साथ नाट्य जगत को भी भारी धक्का पहुँचा।

लीटिल बैलेट्रूप

इसकी स्थापना स्व० शान्तिवर्द्धन द्वारा २० जनवरी १९५२ को की गई थी। इसमे कुल ४-५ कलाकार थे।–एक ढोलची, एक मुकुट-मुखौटे बनाने वाला और २–३ नाचने वाले बस पुतलियो की सरल तथा शक्ति शाली मुद्राओ से इन्होने प्रेरणा प्राप्त कर लाभ उठाया। इस प्रकार ८ माह के अथक परिश्रम के बाद "रामायण" का पुतली नृत्य शान्तिवर्द्धन ने बम्बई मे प्रस्तुत किया। अमेरी (बम्बई) की एक पुरानी बस्ती मे बड के नीचे छोटा सा मंच बनाया था। इस नृत्य नाट्य से भारतवर्ष मे इस संस्था ने खूब ख्याति प्राप्त की। फिर १९६० मे "पेरिस के 'अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य उत्सव" मे नृत्य नाट्य 'रामायण' प्रस्तुत किया गया जहा इसे मुकुट–मुखौटे वस्त्र और सज्जा के लिए पुरस्कृत किया गया।❀ शान्ति वर्द्धन की प्रेरणा से इस संस्था ने 'क्षुधित पाषाण' 'रामायण,' 'पचतत्र,' 'भारत की खोज' जैसी अनूठी कलाकृतियां देश को प्रदान की। शान्ति वर्द्धन के समय मे ही श्रीमती गुल वर्द्धन उस संस्था मे आ चुकी थी। अत ३ दिसम्बर १९५४ को शान्ति वर्द्धन का देहान्त हो गया तो सारा कार्य भार गुल को ही सभालना

❀ श्री बलवन्त गार्गी रंग मंच, पृ०२२१–२२४

पडा । 'पन्चतन्त्र' जो शान्ति वर्द्धन के समय म प्रस्तुत नही हो सकी थी वह गुल ने प्रर्दाशत की और खूब प्रसिद्धि पाई। आर्थिक कठिनाई के कारण १९६४ मे बम्बई से यह सस्था ग्वालियर में स्थानान्तरित हो गयी और वहा इसका नाम 'रग श्री लिटिल बैले ट्रूप' रख दिया गया जिसका उद्देश्य है प्रशिक्षण और प्रदर्शन का साथ-साथ सयोजन'। ॐ

१९६८ मे यह ट्रूप ओलम्पिक-खेल-समारोह में ख्याति प्राप्त कर आया है। इन्होने नई नृत्य नाटिका 'स्केयर क्रो (काग भगोडा) तैयार की है जो नेहरुजी की पुस्तक डिस्कवरी आँफ इण्डिया पर आधारित है। इसमें एक गाव की बालिका पारू के पश्चाताप पर स्वप्नलोक का कथानक प्रस्तुत करती है।

ाान्तिवर्द्धन के पद चिन्हो पर चलने वाली दो अन्य प्रतिभाएं

श्री उदयशंकर

श्री उदयशकर ने भी नृत्य नाटिका मे बडी ख्याति प्राप्त की है। इन्होने १९४४ । 'भूखा है बगाल' सगीत प्रधान नाटिका प्रस्तुत की तथा १९४६ मे 'इण्डिया इम्मॉर्टल (अमर भारत)" श्री उदयशकर ने 'शकर स्कोप' ने ससार मे एक नया प्रयोग प्रस्तुत किया है। यह प्रयोग नाटक फिल्म नृत्य और सगीत का मिश्रित रुप है जो विश्व मे अपना अद्वितीय स्थान रखता है सबसे पहले श्री उदयशकर ने इसे कलकत्ता मे प्रस्तुत किया। मच पर स्थित माइक्रोरामा पर दिखाई देने वाला अभिनेता दर्शको के बीच बैठे हुए किसी व्यक्ति को आवाज देता है और थोडी ही देर मे वह सच मुच मच से नीचे उतरते हुए दर्शको के मध्य बात करता हुआ दिखाई देता है। अर्थात हमे चलती फिल्म का अभिनेता तत्काल ही दर्शको के बीच आकर खडा हो जाय यह आश्चर्य चकित कर देने वाला

ॐ श्री किशोर रमण टडन नृत्यागना की आत्मा उसके अगप्रत्यग मे बसती है, धर्मयुग (१८-१-७०) पृ २६

प्रयोग है। श्री उदयशकर के अनुसार यह प्रदर्शन जादू का सा आभास देता है और मनोरन्जन की चरम सीमा भी छूता है।' ※ इसमे लगभग २२–२५ कलाकार एक साथ भाग लेते है। यह ढाई घटे की प्रस्तुति होती है।

दूसरी बार यह प्रयोग दिनाक ८–१०–७१ को दिल्ली मे भी प्रस्तुत किया जा चुका है।

श्री गजानन वर्मा

श्री उदयशकर सदृश्य नृत्य नाटिका मे प्रसिद्धि पाने वाले श्री गजानन वर्मा हैं। आपकी दो प्रमुख प्रस्तुतियो "बारह मासा" और "७० खान ७२ उमराव" को बम्बई मे अत्यधिक ख्याति प्राप्त हुई। बतलाया जाता है कि इन प्रस्तुतियो से प्रभावित होकर सगीत निर्देशक श्री जयदेव ने श्री गजानन वर्मा को अपने गले लगा लिया। श्री वर्मा रतनगढ (राजस्थान) के निवासी हैं। आजकल आप कलकत्ता म "सास्कृतिक सगम लिमिटेड" नामक फिल्मी सस्था के सगीत निर्देशक है और एक फिल्म "पग घुघुरू बाध मीरा नाची रे" के निर्माण मे सलग्न है।

इसी प्रकार दिल्ली के श्री नरेन्द्र शर्मा भी नृत्य नाटिका मे बड़े प्रसिद्ध नर्तक हुए हैं जिनकी चर्चा दिल्ली की नाट्य सस्थाओ म की जा चुकी है।

थियेटर यूनिट

इस सस्था के सस्थापक श्री सत्यदेव दुबे हैं। इसके अन्य प्रमुख कलाकार श्री अमरीशपुरी हैं जो कभी–कभी फिल्मो मे भी काम कर लेते हैं किन्तु उन्हे नाटक ही पसन्द है अतः नाटक के लिए ही अपना सब कुछ त्याग रखा है। इस सस्था के द्वारा अधायुग (१९६२), इन्कलाब, आषाढ का एक दिन, नाटक तोता मैना, बन्द दरवाजे,

※ साप्ताहिक हिन्दुस्तान (४-१०-७१)

तो जनमेजय, प्रीत, ययाति(१९६७), शुतुरमुर्ग (१९६८) चुप कोर्ट चालू हैं, आधे-अधूरे १९६९-७०), मैं सुधर हूं, एवं इन्द्रजित, आदि नाटक खेले जा चुके हैं। इन सभी नाटकों में श्री अमरीशपुरी ने काम किया और ख्याति प्राप्त की और इस ख्याति के कारण ही उन्हें 'रेशमा और शेरा' फिल्म में शान्ति प्रिय रहमत खाँ की भूमिका निभाने को मिली किन्तु फिर भी उन्हें नाटक ही प्रिय है। उनका कहना है कि "मैं नाटक में, नाटक मुझ में' है। सत्यदेव दुबे ने लिखा है कि हमारे जितने कलाकार हैं मुझे छोड़कर सभी अहिन्दी भाषी हैं, उन्हें कुछ भी पैसे नहीं दिए जाते। ❀ हिन्दी नाटकों के अतिरिक्त यह संस्था अन्य भाषाओं के नाटक भी खेलती है। विजय तेन्दुलकर कृत 'गिधाडे (अर्थात गिद्ध) नाटक प्रस्तुत कर 卐 इस संस्था ने मराठी रंगमंच को भी अपना सहयोग दिया है। इसके प्रमुख कलाकार हैं अमरीशपुरी, सरला मेहता, कुलभादेश पाण्डे, ज्योत्स्ना कार्येकर, दीपा बसरूर आदि। श्री सत्यदेव दुबे इस संस्था के सर्वेसर्वा हैं। वे सिने तकनीक एवं सिने गीतों से अत्यधिक प्रभावित है तभी हिन्दी नाटकों में "बाबुल मेरा नैहर छूटो जाय" "तुम बिन जाऊं कहाँ" "कभी तनहाइयों में यूं हमारी याद आयेगी" आदि गीतों को जबरदस्ती कहीं न कहीं जोड़ देते हैं तथा परदा खुलने से पहले भी फिल्मी अन्दाज से नाटक के नामों की घोषणा करते हैं। ● इन सब बातों से ऐसा प्रतीत होता है कि थियेटर यूनिट हिन्दी प्रदर्शन की दृष्टि से हिन्दी के मंचित नाटकों में एक कड़ी जोड़ने का का काम अवश्य करती है किन्तु उसके विकास की ओर उन्मुख नहीं है। हाँ, अमरीश पुरी जैसे अभिनेता इसी संस्था की देन है जो हिन्दी नाट्य जगत की प्रतिष्ठा है।

त्रिवेणी रंगमंच बम्बई (१९६२-अद्यावधि —

जोधपुर निवासी चलचित्र जगत के अभिनेता श्री सज्जन मंच के भी ख्यातिप्राप्त

❀ धर्मयुग (२५-१-७०) समृद्धि बनाम संस्कृति, पृ. १९

卐 धर्मयुग (२३-८-७०) पृ. ३९

● दिनमान (१३-९-७०) पृ, ४३-४४

कलाकार है । ८ वर्ष तक आप भी पृथ्वी-थियेटर्स में रहे हैं । आप हिन्दी रंगमंच के अप्रतिम अभिनेता हैं । आपने नाट्य दल की अनुभूति कर यही निष्कर्ष निकाला कि नाट्य क्षमता, एवं नाट्य कौशल बताने का एक अन्य रास्ता भी है और वह है एकाकी अभिनय यह विचार लेकर आपने जनवरी १९६२ को त्रिवेणी रंगमंच नामक संस्था को स्थापित किया और इसी के नाम से 'एकाकी अभिनय' के कार्यक्रम देने लगे । आपने भारतीय नाट्य शास्त्र का सांगोपांग अध्ययन कर आंगिक अभिनयो का रसा की मुद्राओं के माध्यम से दर्शकों को विमुग्ध कर दिया है । भारत के कोने कोने में आपने अपना एकाकी अभिनय प्रदर्शन किया है । भारत के अतिरिक्त ९–८–६८ को लन्दन में भी यह कार्यक्रम देकर भारत का मान बढाया है । इनके प्रमुख एकाकी अभिनय *(One man show)* है—अब तो मैं जवान हूँ, गफूर सर जाफना, मूक विदूषक, शायलॉक, बिना पैसे का भोज, चाँदी की रोटी, सपूत, ए.बी सी डी चुनाव भाषण, राखी, जवान का बयान आदि । आपके अभिनय समीक्षाए नवभारत (१८–६–७२), युगछाया (३–४–६८) ,कला संसार कलकत्ता (२६–१२–६४ एव ६–१२–६६) साप्ताहिक हिन्दुस्तान (७–१०–६२) *Times of India* (२३–६–६२) *States man* (२६–२–६८), वन्द्रोलर जोधपुर (१ जुलाई ७१) आदि मे प्रकाशित हुई हैं । इनकी यह व्यावसायिक रुचि है किन्तु जिस संस्था की ओर से जाते हैं उसे भी पैसा देते हैं । इन्हे मंच सज्जा की आवश्यकता नही होती आपने ६रसों को और उनके भावानुभावो को अभिनय रूप मे प्रस्तुत किया है जिससे पता लग सके कि रसो के कैसे स्वरूप हैं । हिन्दी रंगमंच के विकास मे आपका यह महत्वपूर्ण योगदान है । एकाकी अभिनय को अंग्रेजी मे "पेन्टोमाइम" कहते हैं । फ्रांस के मार्शल मार्शू पेन्टोमाइम किंग कहलाते हैं । उनका एकाकी अभिनय शब्दहीन होता है जब कि श्री सज्जन का शब्दो पर आधारित ।



कलकत्ता की नाट्य संस्थाएं

रगकर्मियो में एव सुप्रसिद्ध अभिनेताओं में सर्व श्री हमीदुल्ला, देवेन्द्र मल्होत्रा, अरुण सिंहल, हनुमान शर्मा, बेनी प्रसाद शर्मा, नद लाल शर्मा, विजय बकाया, सतीश नारायण, सरताज माथुर, पृथ्वीनाथ जुत्सी, इला पाण्डेय, धनन्जय कौल, गिरीश के सुमन, हिम्मत सिंह और श्रीमती मीनाक्षी शर्मा आदि है।

जयपुर में श्री बाल मोहन शाह द्वारा सहालिक 'राजस्थान रगमच' नामक सस्था कार्य कर रही है जो सगीत एव नृत्य, नृत्यनाट्य का प्रशिक्षण एव प्रदर्शन का कार्य करती है। इसके द्वारा 'शकु तला' नृत्यनाट्य प्रदर्शित हो चुका है।

रवीन्द्र मंच पर खेले गए नाटकों की सूची---

१६६६ कपूस, तुगलक, ढोंग, अण्डर सेक्रेटरी, भूमिजा, उधार का पति, जलन, प्यार का मिलन, अपनी-अपनी-करनी, कोणार्क।

१६६७ रेत की दीवार, नेफा की एक शाम, सोना सोना सोना, काचन, रग कठ-धरे माटी जागी रे।

१६६८ गुस्ताखी माफ, एवं इन्द्रजित, सोना सोना सोना, कोहिनूर का लुटेरा, छपते-छपते, आषाढ का एक दिन, पत्थर की आखे, दीवार, धर्मशाला, ढाई आखर प्रेम का, उलझन।

१६६६ शुतुरमुर्ग, शारदीया, आधे अधूरे, उलझन, एक और दिन, खामोश! अदालत जारी है, धर्मशाला, मुनोजनमेजय, कस्तूरी मृग, कदम-कदम बढाए जा, और अजन्ता से पेरिस तक आदि।

इसी प्रकार आज तक तो न जाने कितने ही नाटक खेले जा चुके हैं एतदर्थ यह कहना अनुपयुक्त नही होगा कि आज जयपुर हिन्दी रग मच की सेवा करने मे अग्रगण्य है।

बीकानेर की नाट्य संस्थाएं—

बीकानेर का टाउन हॉल, जयपुर और जोधपुर के सुव्यवस्थित मच से भी बहुत पुराना है जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर नाट्य प्रस्तुतियाँ बहुत पहले से होती आ रही है। यही रग चेतना का एक प्रतीक है जहाँ आज भी बहुत से नाटक अभिनीत किए जाते हैं। बीकानेर मे गोपाल जी नामक व्यक्ति को मच तम केवल राम लीलाए खेलते देखा जिसम वह स्वय हास्य अभिनय प्रस्तुत कर दर्शकों को हसाया ते थे। स्वामियो का भी एक सघ था जो असोलाई तलाई के कलाकारो एव को एकत्र बनाया गया था। जो सास्कृतिक कार्यक्रमा म पिछडा हुआ था। मैंने जब १९५६ मे ी श्री भास्कर नाट्य मडल स्थापित किया तब स्वामियों के बहुत सारे कलाकारो ने म मडल की सदस्यता स्वीकार करली। 'वैसे नेशनल थियेटर" और "प्रगतिशील ला सगम" बीकानेर की सबसे पुरानी नाट्य सस्थाए हैं जिसकी विस्तृत जानकारी प्राप्य है।

श्री भास्कर नाट्य मडल (१९५६—१९५७)

स्कुल स ही नाटक की मुझे रुचि थी। जोधपुर स बीकानेर नौकरी के कारण जाना पडा। यहाँ पर नाटक की ओर लोगों की उदासीनता देख बडा क्षोभ हुआ। यहाँ के दर्शकों को नाटक देखन की अत्यधिक रुचि है। मैंने यहाँ जाते ही १९५६ मे श्री भास्कर नाट्य मडल की स्थापना की। सस्था क सबसे प्रथम और द्वारा सबसे अतिम मेरे नाटक 'इसान" का प्रदर्शन किया गया क्योंकि मेरे दूसरे नाटक 'मीरा' का पूर्वाभ्यास एक माह तक हुआ और बाद म मेरे जोधपुर स्थानान्तरण हो जाने के कारण वह नहीं खेला जा सका। 'इन्सान' नाटक मे सभी पुरुष पात्र थे जो मेरे निर्देशन मे खेला गया था किन्तु 'मीरा" नाटक हेतु हम बीकानेर की सुप्रसिद्ध पाश्व गायिका की तलाश करनी पडी जिसके लिए हमे बडे कष्ट झेलने पडे। 'मीरा' के लिए भी अभिनेत्री को छूठ लिया किन्तु राम के लिए किसी पुरुष पात्र को ही तयार करना पडा। एक महिने तक बहुत ही अच्छे गढ

से पूर्वाभ्यास होता रहा किन्तु बाद में यह नाटक मेरे स्थानान्तरण के साथ-साथ और भी कुछ कारणों से प्रस्तुत नहीं किया जा सका।

इस मंडल में बीकानेर के सेवक जाति के कलाकार अधिक थे जिनमें सर्व श्री शिवरतन शर्मा, चाँद रतन सेवक, फँजो, बिसन लालजी तथा जुगल जी सेवक और स्वामियों के कुछ अच्छे कलाकारों में श्री मत्यू और श्री देवकिसन के नाम उल्लेखनीय हैं अभिनेत्रियों में कृष्णा, अख्तर, मुख्तर तथा संगीतज्ञों में सर्वश्री मोडाराम तथा चम्पा के नाम प्रमुख थे। पं० शिवरतन जी ने भास्कर नाट्य मंडल के तत्वावधान में बाल रंगमंच का प्रचलन किया।

अनुराग कला केन्द्र, बीकानेर (१९५७—अद्यावधि)

यह बीकानेर की बहुत पुरानी संस्था है। इसके "देश की सीमा पर" और 'कफन' नाटक बहुत प्रसिद्ध हैं। 'चुनाव भास्कर' नामक हास्य भी दर्शकों को हंसा हंस कर लोट-पोट कर देता है जिसमें श्री जयनारायण व्यास निर्मोही का सेठजी का अभिनय तथा एक नौकर काअभिनय बड़ा प्रभावशाली होता है। इसके प्रमुख रंगकर्मी श्री जयकृष्ण व्यास, निर्मोही धनंजय वर्मा, वेद प्रकाश राही, नामक हिन्दुस्तानी, यतीश शर्मा मधु अग्रवाल आनन्द कबीर और देव कृष्ण व्यास आदि हैं।

जोधपुर की नाट्य संस्थाएं—

जोधपुर की लगभग सभी नाट्य संस्थाएं अव्यावसायिक है। एक दो नाट्य दल व्यावसायिक तौर पर अपने नाट्यायोजन करते रहते हैं जिनमें श्री अम्बालाल व्यास और श्री कालूराम प्रजापति के नाट्यदल प्रमुख हैं। श्री व्यास की सुपुत्री कृष्णा सम घड़ा नृत्य और भवाई नृत्याभिनय और स्वयं व्यास अभिनय, एवं निर्देशन करते हैं तथा श्री कालूराम प्रजापति की नाट्य संस्था में भी एक भवाई नृत्यांगना कृष्णा और भगवानदास हैं। इनके अतिरिक्त श्री कालूराम के पास बाल कलाकार अधिक हैं। ये दोनों नाटयदल उच्च स्तरीय

नाटक प्रस्तुत नहीं करते। इनकी प्रस्तुतियाँ हास्य और नृत्य प्रधान हैं। जनता का मनोरंजन और संस्था के हितार्थ अपनी कमाई, इनका मुख्य उद्देश्य है श्री अंबालाल व्यास का नाट्यदल तो बहुत पुराना है किन्तु श्री कालूराम के दल को बने ६-७ वर्ष ही हुए हैं। दलों से भी बहुत पहले से जोधपुर में अव्यावसायिक हिन्दी रंग मंचीय संस्थाएं देखने मिलती है वे निम्नलिखित हैं-

श्री भास्कर नाट्य मंडल (१९५८ अद्यावधि)

बीकानेर से जोधपुर आ जाने के बाद १९५८ में हमने जोधपुर में यह संस्था स्थापित की। इसके स्थापना समारोह के तत्वावधान में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन माननीय डॉ० सोमनाथ गुप्त के कर कमलों द्वारा हुआ जो उस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। इस संस्था के द्वारा मुनीम चटपट लाल, प्रो० हिन्दू मिन्नू, शतरंज के खिलाड़ी (श्री अतुल नारायण नाखरे द्वारा नाट्य रूपान्तरित) दुनिया के दो इन्सान, मौक मुशायरा, अदालत, घर-घर की बात, बेटी और बेटी, युद्ध बाम युद्ध कोयला नगर का भूकम्प आदि प्रमुख प्रस्तुतियाँ दी गयीं। इसमें प्रमुख निर्देशक थे, श्री गिरीश के. सुमन अतुल नारायण नाखरे तथा अन्य अभिनेतागणों में श्री गोयल, कुमारी मधु, बेला, संध्या चेतन (रामनारायण), बैस और संगीतज्ञों में सर्व श्री शेरसिंह, इब्राहिम, तेजसिंह आदि थे। 'शतरंज के खिलाड़ी' में मंच पर अंग्रेजी सेना को मार्च करते हुए बतलाया गया था तथा मीर-मिरजा (मैं और श्री अतुल नाखरे) को सचमुच की तलवारों से युद्ध करते हुए देख जनता में सनसनी फैल गयी थी। हमने इस दृश्य को बताने के लिए लगभग १५ दिन तक तलवार के दाँव पेंच सीखे थे।

२. श्री एज (Amature Artist's' Association.

-यह संस्था श्री अनिल गुप्त, बाबूलाल बोहरा एवं सालसिंह के द्वारा स्थापित की गयी थी। ये तीनों बड़े प्रसिद्ध अभिनेता थे। जैसे ही इन्होंने को श्री एज का नाम

सुनाया जाता तो पहले से ही करतल ध्वनियों से सम्पूर्ण प्रागण गूंज उठता ' इनका कार्यक्रम प्रारंभ होता । इनकी प्रमुख प्रस्तुतियां हैं—हकीम लुकमान, मॉक यरा, अनिल गुप्त का एकाभिनय 'सफर से पहले' आदि । श्री अनिल के बम्बई च के बाद यह संस्था भी टूट गयी । वैसे इसके अन्य अभिनेताओ मे श्री लालसिंह हरीश का भी नाम उल्लेखनीय है । श्री बाबूलाल बोहरा आजकल जोधपुर मे सरकार के 'गीत एव नाटक प्रभाग' म कार्यरत है ।

३. राजस्थान लोक कला प्रतिष्ठान

इसकी संस्थापिका आकाशवाणी गायिका सुश्री धीरासेन है । यह संस्था वे संगीत एव लोक गीतो के आयोजन करती है वैसे कभी कभी हिन्दी नाटक भी खेलती है इसके प्रमुख रंगकर्मी, हैं—सुश्री धीरासेन, श्री नद किशोर सोमानी, और श्री दाऊला आचार्य आदि ।

४ एकलव्य नाट्य दल

इसके सस्थापक श्री मदन मोहन माथुर हैं । अन्य रगकर्मिया मे सर्व श्री विजय माथुर, श्याम पवार, रामेश्वर सिंह, आनन्द शेखर व्यास, अल्ताफ चेतन माथुर, रुप किशोर, विजय भटनागर, अरविन्द व्यास, तथा सु श्री साधना गुप्ता, दीपिका दुग्गड, रेणु माथुर, शशि माथुर और प्रमीला गुप्ता आदि है । इसकी प्रमुख प्रस्तुतियां 'स्वप्न बोध' आर्थी के अनाथ कार्बन कॉपी, ग्रेन्ड रिहर्सल पेपर वेट कस्तूरी मृग तथा डॉ० लालढ्न ' मि०अभिमन्यु" हैं ।

५. नाट्य रंगलोक (१९५७—अद्यावधि)

इस संस्था की प्रमुख प्रस्तुतियां—तुफ बिन सूना रे जगसारा, चार उगलियां एक अगूठा काबुलीवाला, खून और पसीना, राजपूत की हार, जिन्दगी और मौत, परमवीर चक्र, धरती स्वर्ग है, तलाश जोरू आदि है तथा प्रमुख रगकर्मी—श्री गिरीश के सुमन

प्रकाश नागर, नरेन्द्र सांखला, उर्मिला नागर, सुभाष लूथरा, कमलेश शर्मा, सुरेश जांगिड़ डॉ० विश्वनाथ शर्मा (विष्णु), तथा कमल कान्ता शर्मा आदि हैं।

६. माडर्न संगीत नाट्य संस्था (१९६४—अद्यावधि)

इसके प्रमुख रंगकर्मी—सर्व श्री प्रेमसिंह गहलोत, गिरीश के., सुमन चिरंजी लाल माथुर, संतोष कालरा, सुभाष लूथरा आदि हैं तथा 'समय चक्र' 'आशा का दीप' मेहमान' आदि मुख्य प्रस्तुतियां हैं।

७. जोधाणा कलाकार संघ (१९७१—)

इसकी प्रमुख प्रस्तुति नृत्य नाटिका "जटायु वध" है। इस संस्था में जोधपुर के गीत एवं नाटक प्रभाग के लगभग सभी कलाकार तथा जोधपुर के अन्य चोटि के कलाकार सम्मिलित हैं। इस संस्था के वयोवृद्ध निदेशक श्री सत्यनारायण सारस का स्थानान्तरण हो जाने के कारण यह संस्था भी मृतप्राय है।

८. राजस्थान राज्य विद्युत मंडल (१९७१-)

X E N, श्री अब्दुल हमीद इसके संचालक हैं। 'उसने कहा था' इस संस्था की विशेष नाट्य प्रस्तुति है। यह संस्था सक्रिय रूप से कार्य करती है। इसके प्रमुख कलाकार हैं सर्व श्री प्रकाशनागर, पदम भंडारी, रामेश्वरलाल माथुर तथा बाबूलाल माथुर आदि।

९. अजन्ता रंगमंच—

इसके संचालक हास्य अभिनेता श्री ब्रजरतन हैं। वर्ष में कई छोटे-मोटे कार्यक्रम इस संस्था की ओर से होते रहते हैं।

१० प्रगतिशील युवक संघ—

यह जोधपुर की बहुत पुरानी नाट्य संस्था है और अनारु फौजदार इसके संचालक हैं। पारसी थियेटर का इस पर आज भी प्रभाव देखा जाता है। इसके द्वारा पुराने नाटक प्रस्तुत किए जाते हैं।

११ मयूर नाट्य संघ (१६७१—)

इसकी स्थापना १४ जनवरी १६७१ को हुई। यह जोधपुर की नवोदित नाट्य संस्था है जिसके संस्थापक श्री अब्दुल गफूर खान हैं। श्री खान स्वयं बहुत पुराने कलाकार एवं निदेशक हैं। इनके द्वारा लिखित 'उजले शरीफ' और "ओवे आदमखोर" इस संस्था के दो प्रमुख नाट्य प्रस्तुतिकरण हुए हैं। यह उच्च स्तरीय संस्था है। इसमें लगभग ३० रंगकर्मी हैं जिनमे प्रमुख कलाकार हैं श्री रघुवीर, श्री श्याम पवार, रवि, महेश माथुर अशोक माथुर,अंशुरचंद,आशा पाराशर, मधु ललिता जोशी और गोवर्धन दैया आदि। डॉ० विश्वनाथ शर्मा को इस संस्था का विशिष्ट परामर्शदाता एवं निदेशक माना गया है।

श्री अब्दुलगफूर खान द्वारा लिखित एक और नाटक 'एक गुनाह मेरा' का पूर्वाभ्यास किया जा रहा है। श्री खान कृत ओवे आदमखोर बहुचर्चित नाटक है जिसका तीन बार प्रस्तुतीकरण हो चुका है। होटल परमार की आलम्बिन एवं उनके पुत्र श्री विटु साहब की नाट्य रुचि की अनुकम्पा से इस संस्था का कार्यालय उसी होटल मे स्थित है।

इन संस्थाओं के अतिरिक्त जोधपुर में ऐसी अनेक रंग संस्थाएं हैं जो हिन्दी रंगमंच के विकास मे अपना पूर्ण सहयोग दे रही है जैसे "राजस्थान सांस्कृतिक परिषद्"। यह संस्था समय समय पर नाट्यायोजन करती है। इसके सचिव श्री राधेश्याम माथुर हैं। कार्यकारीणी के एक अन्य प्रमुख सदस्य श्री प्रेमप्रकाश माथुर हैं।



नाट्य शालाएं

भरत ने अपने नाट्य शास्त्र में यह अवश्य लिखा है कि नाट्य शालाएं तीन प्रकार
की होती थी किन्तु इस बात का कहीं भी उल्लेख प्राप्त नहीं होता कि ऐसी नाट्य शालाएं
उस समय भारत में कहां-कहां थीं । भरत के बाद सीताबेंगा और जोगी मारा गुफाओं
का विवरण अवश्य प्राप्त होता है जिन्हें कतिपय विद्वानों ने नाट्य शालाएं माना है किन्तु
नाट्य प्रस्तुतीकरण के व्यावहारिक पक्ष के आधार पर उन्हें नाट्य शालाएं मान लेना
भ्रामक है, वे गुफाएं राम की मन्त्रणा-स्थली फिर भी कही जा सकती हैं ।

७वीं शताब्दी में 'बाघ (व्याघ्र) गुफा' ग्वालियर का संकेत हमें वाचस्पति गैरोल
की पुस्तक 'भारतीय नाट्य परम्परा और अभिनय दर्पण' में मिलता है । १३वीं शताब्दी
में कोणार्क नाट्य मंडप का भी उल्लेख हुआ है ❀ तथा 'झांसी की रानी' उपन्यास में
गंगाधर राव के रंगमंच के विषय में भी कुछ विवरण बताया जाता है किन्तु इनके बारे में ,
पर्याप्त जानकारी अभी शेष है ।

अस्तु इस परिचर्चा में भारत में विद्यमान प्रेक्षालयों अथवा रंगशालाओं का विवरण
रा जा रहा है ।

दिल्ली की नाट्यशालाएं

इर्विन थियेटर

इस स्थान को आजकल नेशनल स्टेडियम कहा जाता है । यह एक खेलकूद का मैदान
है किन्तु इसमें जुड़े थियेटर शब्द के आधार पर अनुमान लगाया जाता है कि यह सद्-
१९३३ में अवश्य ही रंगस्थली रही होगी और यहां पर नाटकादि प्रस्तुत होते होंगे । इस
प्रकार के कई विदेशी थियेटर्स का उल्लेख कई लेखकों ने किया है जहां पर राजाओं के

❀ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ७ जून १९७०, पृ १३.

सामने प्रदर्शन हुआ करते थे और दर्शको की भी अपार भीड जुटती थी। ये सभी सीढी-नुमा प्रेक्षालय होते थे। ५३४ ई पू. मे यूनानी नाट्यशालाए इसी प्रकार की होती थी❀ रोम मे ऐसी नाट्यशालाओ मे ८० हजार दर्शक एक साथ बैठ सकते थे। रूस मे भी कायेरिन द्वितीय के काल (१७२९–९६) मे सीढीनुमा प्रेक्षागृहो का चित्रण मिलता है।卐 इस प्रकार की अनेको रगशालाओ के अमेरिका, रूस, फ्रांस, इगलैण्ड तथा जर्मनी आदि के नाट्य साहित्य मे ढू ढे जा सकते है।● अस्तु दिल्ली के इरविन थियेटर के इन प्राप्त प्रमाणो के आधार पर यदि नाट्यशाला कहा जाय तो मानने में कोई आपत्ति नही होनी चाहिये। अग्रेजो के राज्यकाल मे इसका निर्माण हुआ था अत इस पर पूरा अग्रेजी प्रभाव है और इसीलिए यह सीढीनुमा प्रेक्षालय है। इसके एरिना के नीचे कुछ पक्तिया इस प्रकार लिखी हैं—

The Irvin Theatre
A Bhavnagar Gift
By His Highness

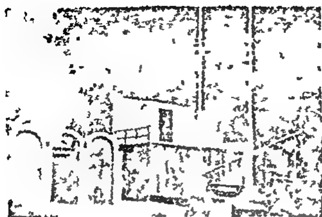
Maharaja Shri Krishna Kumar ji Bhav Singh ji Maharaja of Bhawnagar who donated Rs 5 Lakhs for is Construction Opening performed by His excellency The Rt Hon ble The Earl of Willingdon GMSI GCMG GMIE GBE, Viceroy and Governer General of India Feb 13th 1933

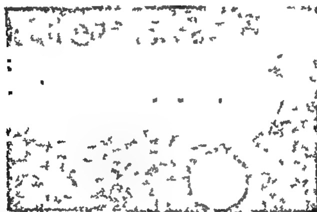
इस प्रकार इस आलेख से यह तो विदित हो जाता है कि भावनगर-महाराज ने पांचलाख रुपये लगाकर इसे निर्मित कराया किन्तु यहां पर कौन-कौन से प्रस्तुतीकरण

❀ हिन्दी विश्वकोश (खण्ड ६) प्रथम सस्करण वि सन् १९६६ ई० पृ २९६–२९७

卐 वही पृ ३००

● दे० शेल्डान चेनी कृत 'रगमच' अनुवादक श्री कृष्णदास पृ ५९४





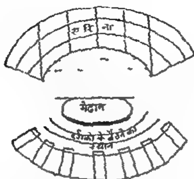


६ अल्काजी के सुरुचिकारी कक्ष के तीन दृश्य, दिल्ली



रवीन्द्र भवन, दिल्ली

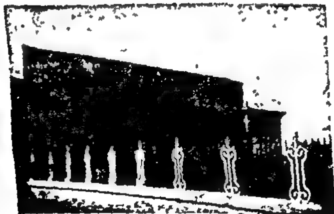
हुए, इसकी जानकारी अप्राप्य है। ऐसा अनुमान है कि १८३३ से १८४७ के बीच यहाँ पर कई प्रदर्शन हुए होंगे। रेखाचित्र से इसका सीढ़ीनुमा प्रेक्षालय होना साफ प्रतीत होता है।



ऐरिना के नीचे कई कमरे बने हुए हैं जहा पर आज प्रतियोगी-दल आकर ठहरते हैं सम्भवत जिन्हें कभी कलाकारों ने अपने वेष विन्यास-कक्ष बनाए होंगे किन्तु आज यह सब खेलकूद हेतु क्रीडा कक्ष बने हुए हैं।

रवीन्द्र भवन—

इस भवन में तीन अकादमियाँ कार्य करती हैं—(१) साहित्य अकादमी (२) संगीत नाटक अकादमी तथा (३) ललित कला अकादमी। ये तीनों सरकारी संस्थान हैं जिन्हें केन्द्रिय शिक्षा मन्त्रालय से आर्थिक सहायता मिलती है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (*National School of Drama*) इसमें एक ऐसी शिक्षण संस्थान है जहाँ पर कला की शिक्षा-दीक्षा दी जाती है। इस दीक्षा की अवधि तीन साल की होती है और प्रतिभाशाली अभिनेताओं को २००) रु० प्रतिमाह छात्रवृत्ती (*Scholarship*) भी दी जाती है। इस दीक्षा में भारतीय एवं विदेशी संस्कृति का ज्ञान नाट्य रचना के माध्यम से कराने के लिए छात्र को वहाँ के वातावरण, वेष भूषा, सेट आदि का परिज्ञान कराया जाता है। इसके साथ-साथ नाट्य प्रस्तुतीकरण का व्यावहारिक ज्ञान भी कराया जाता है। इसमें ६ व्यक्तियों को मिलाकर एक संघ तैयार करते हैं जिसे (*Reportary Group*) कहा



रवीन्द्रालय, लखनऊ

७ ध्वनि प्रसारण यंत्र (माईक हैं तथा एक युनिवर्सल माइक भी यहाँ पर है जो मंच भाग की ध्वनियों को ग्रहण कर प्रसारित करता है। यहाँ पर प्राय· ८ ड्राइंग रूम सेट पर किए जाते हैं । नाटकों के लिए सेट ही लाते है। रवीन्द्र मंच का किराया भी बहुत अधिक है जो वसूला जाता है। बतलाया जाता है कि जयपुर के रंगकर्मी किराए को में प्रयत्नशील हैं। जोधपुर में स्थित राजस्थान संगीत नाटक । संचालन होता था तब इसकी सचिव सुश्री सुधा राजहंस, मध्यस्त ^ प्रशासी अधिकारी श्री कर्मवीर माथुर थे। इसके अन्य कुशल ॅ सर्वश्री राजेन्द्र सिंह बारहट नरपत सिंह, चम्पावत, दाऊलाल च। शिवसिंह आदि थे किन्तु अब दिनांक २५-१०-७२ से इसके राजस्थान ललित कला अकादमी जयपुर को सौंप दिया गया वार्षिक अनुदान पौने दो लाख रुपयों से अन्य कार्यक्रमों (कलाओं का सर्वेक्षण, शोध संग्रह सर्वेक्षण, प्रकाशन अ· के साथ रवीन्द्र मंच का संचालक कठिन सिद्ध हो ।

श्री जयनारायण व्यास स्मृ...
(टाउन हॉल)

जोधपुर टाउन हॉल का उद्घाटन भारत कर कमलों से १७ जनवरी १९७१ को हुआ। बाद इस स्मारक की आधार शिला तत्कालीन मार्च १९६४ को रखी थी। राज्य सरकार ने जोधपुर नगर परिषद् ने १ ५० लाख रुपये तथा का योगदान किया गया । इस भवन के निर्माण अपने कार्यक्रम प्रस्तुत कर धनराशि का ।ान ७ लाख ८६ हजार ८५ रुपये लगे ।

पूरे वागपीठ की लम्बाई चौड़ाई ८०'×५५' है। मंच की लम्बाई ३६', चौडाई ७ और जमीन से साढ़े तीन फुट ऊंचाई है। दोनों ओर ७ ७ पखवाइयां है जो प्रत्येक ४' चौड़ी हैं। पखवाइयां स्थिर (*fix*) हैं तथा बहुत पास-पास लगाई गई हैं जिनमें से केवल अभिनेता प्रवेश पा सकते हैं बड़े सेट आदि इन पखवाइयो से होकर मंच पर नहीं लाए जा सकते। यह बहुत बड़ी कठिनाई है जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि मंच निर्माण मे किसी मंच शिल्पी अथवा मंच विशेषज्ञ के सुझाव नहीं लिए गए। आठवीं पखवाई से सलग्न हार्ड बोर्ड की दीवार है जिसे काला रंग दिया गया है। हार्ड बोर्ड-दीवार के पीछे लगभग ६'-७' चौडी गलेरी है जहां कूलिंग प्लांट लगाया गया है। मंच पर कुल ४ परदे हैं। मंच तल लकडी का बनाया गया है जो बहुत ठोस है। संगीतज्ञों के बैठने के लिए भी कोई अलग स्थान नही है, वे मंच पर बैठे सभी दर्शकगणों को दिखाई देते हैं। मंच तल के मध्य बिजली के स्विच लगाए गए हैं जहां से प्रसारण यंत्रों का सम्बध जोडा जाता है। नर्तकों के लिए मंच तल का यह भाग कभी कभी कष्ट दायक भी सिद्ध हो जाता है। मंच के दोनो ओर ३-३ परदे हैं तथा लगभग २०'×३५' के रंगरजन कक्ष (*Green Rooms*) बने हुए हैं जिनमे प्रकाश-प्रबंध बोबन लगे हुए हैं। रंगरजन कक्षों मे एक ओर १३ तथा दूसरी ओर २० सीटें है तथा संगमरमर की तीन-तीन आधार शिलाएं बनाई गई हैं जिन पर एक तरफ कांच लगे हुए हैं जिनके सामने बैठकर अभिनेतागण अपने रंगलेपन किया करते हैं। मंच से नीचे उतरने के लिए दोनों ओर ६-६ पेडियां बनी हुई है। वाग्पीठ मे कुल ६४३ सीटें हैं। मंच के ठीक सामने ३ निकास (*Exit*) तथा एक ओर ३ और दूसरी ओर २ निकास हैं। वाग्पीठ मे ध्वनि-प्रसारण यंत्र दीवारों मे लगाए गए हैं जो बाहर दिखाई नही देते किन्तु फिर भी विशेषता यह है कि दूर से दूर बैठे हुए दर्शक को भी आवाज साफ सुनाई देती है। सम्पूर्ण वाग्पीठ साउंड प्रूफ है। ऊपर एक बालकोंनी भी है जहां पर १७५ सीटें हैं। सीटों पर जाकर बैठने के लिए बीच मे से तीन छोटी एवं सुन्दर पेडियां बनाई गई हैं। इस वाग्पीठ का प्रतिदिन का १५०) रु० किराया है और यदि ध्वनिप्रसारण यंत्र (माइक) भी साथ लिए जाय तो २००) रु० प्रतिदिन लिया जाता है। यहां पर भी ध्वनि व्यवस्था फिलिप्स कम्पनी की है। अनुमानत एक महिने मे यहां १५—२० नाट्य प्रस्तुती-

करण हो जाते हैं। वैसे यह वाग्पीठ यूनियनों, राजनैतिक दलों, सम्मेलनों आदि के कार्य क्रमों के लिए भी किराये पर दे दिया जाता है। इसे जोधपुर पी. डब्लू. डी. ने बनवाया है इसलिए इसका संचालन अभी उसी के हाथ में है। निकट भविष्य में इसे राजस्थान संगीत नाटक अकादमी को सौंप दिए जाने की संभावना है।



❀ भवानी नाट्यशाला

झालावाड़ (राजस्थान) (१९१०-)

झालावाड़ के महाराजा भवानीसिंहजी नाटक आदि के बड़े प्रेमी थे। आगरा से नाटक कम्पनियां झालावाड आकर पारसीक शैली के नाटक प्रस्तुत किया करती थीं। उन्हीं से प्रभावित हो आगरा की किसी एक कम्पनी के निदेशक मिर्जा नजीर बेग एव उनके कुछ चुने हुए अभिनेताओं को महाराजा भवानीसिंह ने झालावाड १९०४ मे बुलवाया। बस यहीं से भवानी नाट्य शाला की नींव पड़नी प्रारंभ हुई। नाट्य शाला के सस्थापक महाराजा भवानी सिंह और नाट्य निदेशक मिर्जा नजीर बेग के सामूहिक प्रयत्नो से राज्याश्रित भवानी नाट्य संस्था विकास की ओर अग्रसर होने लगी। जहां राजा का आदेश हो वहा आर्थिक कठिनाइ नही रहती इसलिए साथ-साथ अनेक दृश्य दृश्यावलियां, रगे परदे, सुन्दर-सुन्दर वेषभूषाए भी बनाई गयी और अभिनय, सगीत एवं गायन का जबरदस्त पूर्वाभ्यास होने लगा। इस प्रकार सर्व प्रथम १९०४ के आरंभ मे ही चार नाटक गुल रूजरीना, गुलेनार फिरोज, खूने नाहक और हरीश्चन्द्र खेले गए। दो वर्ष तक मिर्जा नजीर बेग वहीं रहे और उस समय मे उन्होंने चन्द्रावली, लैलामजनू, अलीबाबा चालीस चोर, मोरध्वज, गुलबकावली, चित्रबकावली, हकीकतराय पूरन भक्त फिसाना अजायब, खुदा दोस्त, इन्दरसभा, नल दमन, जहर इश्क, शीरी फरहाद, रामलीला, भूल भुलैया, माहीगीर, अलादीन का चिराग और कत्ल नजर आदि नाटक खेले। इनमे से कई नाटकों ने महाराज को प्रशसा पायी। राजमाता की सहसा मृत्यु हो जाने

❀ डॉ. कुं. चन्द्रप्रकाश सिंह · हिन्दी नाट्य साहित्य और रगमच की मीमासा के सौजन्य से.

के कारण राजघराने के कतिपय सरदारो द्वारा नजीर बेग का प्रेक्षण अमागलिक ॥ जाने लगा । अत मिर्जा नजीर बेग को झालावाड छोडना पडा ।

नजीर बेग के बाद १९०६ मे तुलसीराम नामक व्यक्ति ने इस नाट्य सस्था का कार्य भार सभाला । वे स्थानीय कलाकारो को एकत्र कर नाट्यायोजना करते थे । कुछ दिनो बाद श्री तुलसीराम का स्वर्गवास हो गया जिससे यह नाट्य सस्था कुछ समय तक बन्द पडी रही ।

झालावाड मे १९०८ ई मे अमेच्योर ड्रामेटिक क का उदय हुआ । इस सस्था ने महाराज भवानी सिंह के जन्म दिवस पर तथा विशिष्ट राजकीय सम्मान मे कुछ अपनी प्रस्तुतिया दीं जिनसे प्रभावित होकर महाराज के हृदय मे एक स्थायी मच बनवाने की विचार धारा जागृत हुई । फलत १९१० ई. मे उन्होने स्थायी मच की स्थापना की जिसे 'भवानी नाट्य शाला' कहा जाने लगा । इस शाला मे सबसे प्रथम नाटक 'गुलनार फिरोज' खेला गया जिसके दर्शकों मे स्वय महाराजा भवानी सिंह भी थे । बतलाया जाता है कि महाराजा गिन्निया और रुपये लेकर प्रेक्षागृह मे बैठा करते थे और जिसका सुन्दर अभिनय देखते उस पर वे गिन्निया और रुपये उछाला करते थे ।

अब ये नाट्यशाला साधन सम्पन्न बन गयी थी । इसका मच भी देश के तत्कालीन श्रेष्ठ मचो में मे एक था । इस शाला के अपने अनेक अभिनेता, गायक, वादक, नर्तक, नाट्य लेखक भी थे । आहार्य सामग्री भी प्रचुर मात्रा मे बनायी गयी थी । प्रसाधान भी श्रेष्ठ था । बतलाया जाता है कि अभिनताओं के लिए चाइनार्ड्स, चोटीदार बाल विदेशो से मगाये जाते थे ।

१९१४ ई मे इस नाट्य शाला मे नाटक प्रस्तुत करने के लिए बम्बई की एक पारसी थियट्रिकल क को आमंत्रित किया गया जिसने यहा पर 'खूबसूरत बला' और 'महाभारत' नाटक खेले । १९१५ ई मे सोहराब जी की कम्पनी के दो प्रमुख कलाकार पुरुषोत्तमदास और

अब्दुल रऊफ ने अपना सारा जीवन यहीं बिताया । युवराज राजेन्द्रसिंह के कारण १९१७ ई. से इस शाला के मंच पर अंग्रेजी नाटकों का भी प्रभाव दिखायी देने लगा । फलतः अंग्रेजी नाटक किंग जोन्स, हेमलेट और 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' भी यहां पर अभिनीत किए गये । बाद में महाराज के आदेश से नाट्यशाला के नव निर्माण का आदेश हुआ । फलतः नव-निर्मित नाट्य-भवन में १६-७-२१ को सिकन्दर' नाटक खेला गया । इससे पहले जो नाटक खेले गए थे उनमें उर्दू प्रधान थी किन्तु यही एक नाटक ऐसा था जिसके गीतों एवं गद्य-संवादों में हिन्दी की प्रधानता थी । अस्तु झालावाड़ में १९२१ से ही हिन्दी नाटकों का श्री गणेश हुआ था । इसका श्रेय युवराज राजेन्द्रसिंह को दिया जा सकता है । महाराजा भवानीसिंह का प्रेम नाटकों के प्रति बहुत बढ़ गया इसलिए उन्होंने वेतन देकर बाहर से संस्था, व क्लबों को भी आमंत्रित करना शुरु कर दिया । झालावाड़ में भी 'राजेन्द्र ड्रामेटिक अमेच्योर क्लब' की स्थापना राजेन्द्रसिंहजी के कारण हुई । इस क्लब के प्रस्तुतीकरण बम्बई कलकत्ता की व्यावसायिक कम्पनियों से भी उत्तम माने जाने लगे ।

१९२९ में महाराजा भवानीसिंह का स्वर्गवास हो गया इसलिए नाट्य शाला एवं क्लब का कार्यक्रम कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया पुनः १९३० में क्लब की ओर से मेले में टिकट लगाकर नाट्याभिनय दर्शकों को दिखाए गए । इसके बाद राजा के आदेश से नाट्य शाला में भी टिकट लगाकर नाटक खेले जाने लगे । १९३२ में महाराजा राजेन्द्रसिंह ने भी 'अभिमन्यु' नाटक लिखा जिसे भवानी नाट्य शाला के मंच पर प्रस्तुत किया गया । इसमें पूरा पारसी प्रभाव दृष्टव्य था । इसमें चमत्कार भरपूर थे— चक्रव्यूह, कैलाश, जयद्रथ के सिर का कट कर गिरना, पर्वतों पर दौड़ते हुए युद्धरथों को बताना आदि । फिर इस क्लब में शैथिल्य आ जाने के कारण १९३९ में यह बंद कर देना पड़ा किन्तु १९४० ई में युवराज राजेन्द्रसिंह के विवाहोत्सव पर इसे पुनरुज्जीवित करने का आदेश दिया गया । महाराजा के निर्देशन में ही 'कृष्ण-कमला' नाटक का पूर्वाभ्यास प्रतिदिन ६-७ घंटे चलने लगा ।

१९४३ ई में राजा राजेन्द्रसिंह का स्वर्गवास हो गया इसलिए नाट्य शाला एव क्लब की प्रगति को धक्का पहुँचा । इनके बाद राणा हरीश्चन्द्र देव शासक बने जिनके काल मे ग्राम सुधारक कथानको को मच पर लाया जाने लगा क्योंकि राणा लोक-हितकारी प्रवृति के थे । इस प्रकार उन्होने नाटक को लोक रजक से लोक मगल स्तर प्रदान किया ।

भवानी नाट्य शाला इगलैण्ड की अच्छी से अच्छी नाट्य शालाओं के नमूनो के आधार पर बनाई गयी है । नाट्य शाला के नेपथ्यगृह की ओर कई अलग-अलग कक्ष बने हुए है जहा पर अभिनेतागण मच पर आने से पूर्व अपनी तैयारी करते हैं । इसकी पर्याप्त जानकारी अभी शेष है ।



रंगकर्मी : सम्पर्क सूत्र

इलाहाबाद— टेलीफोन

अमृतराय
(हिन्दी नाटककार)
१८, हेस्टिंग्स रोड इलाहाबाद.

अवधेशचन्द्र
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक)
५१६, दारागंज, इलाहाबाद.

बालकृष्ण मालवीय
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक)
इलाहाबाद आर्टिस्ट एसोसिएशन
१३, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

देवीशंकर अवस्थी, (निदेशक)
८८, न्यू कैराना, इलाहाबाद

गिरधर शुक्ल
(माधव शुक्ल के भ्रात।)
(हिन्दी अध्येता)
४६२, मालवी नगर, इलाहाबाद

हीरा चड्ढा
(हिन्दी अभिनेत्री, निदेशक-समीक्षक)
१४२, खुशहाल पर्वत, इलाहाबाद

नरेश मेहता
(हिन्दी नाटककार)
६६ ए लूकरगंज इलाहाबाद

डा रामकुमार वर्मा
(हिन्दी नाटककार निदेशक)
साकेत प्रयागस्ट्रीट
इलाहाबाद

डा सत्यव्रत सिन्हा
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक)
१, तुलाराम बाग, इलाहाबाद

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
(हिन्दी अभिनेता- निदेशक)
२२ केनिंग रोड, बड़ौदा बैंक के पीछे इलाहाबाद

विनोद रस्तोगी
(हिन्दी नाटककार, प्रस्तोता, निदेशक)
आकाशवाणी इलाहाबाद

विजयबोस
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक)
आकाशवाणी इलाहाबाद

बम्बई—

टेलीफोन

अमरीशपुरी — २११०८१
(अभिनेता, निर्देशक)
एम्प्लोयीज स्टेट इन्श्योरेन्स कॉर्पोरेशन — (दफ्तर)
बम्बई.

डा. धर्मवीर भारती — ५३८११६
सम्पादक 'धर्मयुग' — (घर)
साहित्य सहवास — २६८२७१
एस. नं. ३४१ ए. कलानगर बांद्राईस्ट — (दफ्तर)
बम्बई—५१.

कमलेश्वर — ३६७६६८
(हिन्दी नाटककार, अभिनेता) — घर
सम्पादक 'सारिका'
टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१.

कमलाकर सोनटक्के
(हिन्दी-मराठी अभिनेता, निर्देशक, अनुवादक)
अमृत नाट्य भारती (साहित्य संघ)
डा० भालेराव मार्ग, गिर गांव, बम्बई-४.

गजन — ६१२०४३
(अभिनेता, निर्देशक) — (घर)
त्रिवेणी कुटीर, औरलेम, मार्वे रोड, मलाड, बम्बई-६४.

टेलीफोन

सत्यदेव दुबे
(हिन्दी निदेशक समीक्षक)
बी/५०४ सूर्य अपार्टमेंट
ब्रीचकेंडी अस्पताल के सामने
वार्डनरोड, बम्बई-२६.

सुलभा देश पांडे
(हिन्दी मराठी अभिनेत्री-निदेशक)
प्रकाश,
७५, रानाडे रोड, बम्बई-२८.

शमाजैदी
(निदेशक अनुवादक)
द्वारा इंडियन पीपल्स थियेटर एसोसिएशन
प्लॉट ३१ एफ, फ्लेट बी-२, रोकरोड
बांद्रा, बम्बई-५०.

कलकत्ता—

बद्रीप्रसाद तिवारी　　४४७४८६
(हिन्दी अभिनेता निदेशक)　　(दफ्तर)
२५, एमहर्स्ट स्ट्रीट कलकत्ता-६.

गजानन वर्मा　　२३७६६७
(निदेशक)　　(दफ्तर)
संस्कृति संगम लि. १, मंगोलेन कलकत्ता.

टेलीफोन

जमनाप्रसाद पाण्डे
(निदेशक)
३२, बांसतल्लामेन, बड़ा बाजार-कलकत्ता-६

कृष्णकुमार
(हिन्दी अभिनेता-निदेशक)
२३/बी, मोती मुकर्जी रोड
कलकत्ता-१६

डा. प्रतिमा अग्रवाल — ४७१८६६ (दफ्तर)
(हिन्दी अभिनेत्री-निदेशक-अनुवादिका) — ४४२०६३ (घर)
८५, चौरंगी रोड, कलकत्ता

श्यामानंद जालान — २३३३८३ दफ्तर
(हिन्दी अभिनेता निदेशक) — ३४६६४१ (घर)
१०, ओल्ड पो. ऑ. स्ट्रीट कलकत्ता-१

अल्काजी, इब्राहिम — ३८७४०२ (घर)
(हिन्दी-अंग्रेजी निदेशक) — ६१६६२५ (दफ्तर)
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली-१

आर जी आनद टेलीफोन
(हिन्दी-पजाबी नाटककार निदेशक)
२० फायर बिग्रेडलेन, नयी दिल्ली-१

ओम शिवपुरी ४७०७०
(हिन्दी अभिनेता-निदेशक) (घर)
५ ए, माडर्न स्कूल क्वार्टर्स
टोडरमलसन, नयी-दिल्ली-१

बृजमोहन शाह
(हिन्दी नाटककार अभिनेता-निदेशक)
सेंट कोलेबाज हाईस्कूल, नयी दिल्ली-१

दीनानाथ
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक)
३/३७६, लोदी कॉलोनी, नयी दिल्ली-३

गुलशन कपूर
(हिन्दी निदशक)
गीत एव नाटक विभाग (सूचना मत्रालय)
१५/१६ दरियागज, दिल्ली-६

हबीब तनवीर
(नाटककार, अभिनेता, निदेशक)
५ए/१७, वेस्टर्न एक्सटैंशन एरिया
नयी दिल्ली-५

हेमचन्द्र गुप्त (कर्नल)
(हिन्दी निदेशक)
निदेशक, गीत एवं नाटक प्रभाग
सूचना मंत्रालय, १५/१६ दरियागंज दिल्ली-६

जगदीशचन्द्र माथुर
(हिन्दी नाटककार)
४, सिटनलेन, नयी दिल्ली-१

जफर महमद
(अभिनेता, निदेशक)
१५८/६, बसन्त रोड, नयी दिल्ली-१.

ब्रिजेन्द्र कौशल
(हिन्दी अंग्रेजी समीक्षक)
गीत एवं नाटक विभाग (सूचना मंत्रालय)
१५/१६ दरियागंज, दिल्ली ६

डा० लक्ष्मीनारायण लाल
हिन्दी नाटककार, समीक्षक
८/१७ ईस्ट पटेल नगर, दिल्ली ८

मुद्राराक्षस
(हिन्दी नाटककार, [illegible])
[illegible]

टलीफोन

मोहन महर्षि
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक)
एफ-२१, निजामुद्दीन पश्चिम
नयी दिल्ली-१३

नेमिचन्द्र जैन ७०१६२
(अध्येता—समीक्षक—अनुवादक) (घर)
सम्पादक 'नटरंग'
आई—४७, जगपुरा एक्सटेंशन
नयी दिल्ली—१४

रमेश मेहता
(हिन्दी नाटककार—अभिनेता—निदेशक)
श्री आर्ट्स क्लब
७ए/२४ डब्ल्यू ई ए पूसा रोड करोलबाग,
नयी दिल्ली ५

रणवीर सिंह
(समीक्षक, निदेशक)
मालिक-इन्डियन नेशनल थियेटर
कालेज रोड, नयी दिल्ली-१

रामगोपाल बजाज
(हिन्दी अभिनेता, समीक्षक)
११ माडर्न स्कूल क्वार्टर्स
नयी दिल्ली-१

टेलीफोन

रेवती सरन शर्मा
(हिन्दी नाटककार-निर्देशक)
वाई ब्लॉक ४४ सरोजिनी नगर
नयी दिल्ली-३

शांता गांधी
(हिन्दी गुजराती नाटककार, निर्देशक)
निर्देशक बाल भवन
कोटला रोड, नयी दिल्ली-१

डा श्याम परमार
(लोक नाट्य अध्येता)
६/१३, ईस्ट पटेल नगर
नयी दिल्ली ८

डा सुरेश अवस्थी ४८१४६
(अध्येता) (घर)
सचिव संगीत नाटक अकादमी ४५६४७
रवीन्द्र भवन, नयी दिल्ली-१ (दफ्तर)

सुरेन्द्र वर्मा
(हिन्दी नाटककार, समीक्षक)
१३ए/२३, वैस्टर्न ऐक्सटेंशन एरिया
नयी दिल्ली-५

टी पी जैन टेलीफोन
(हिन्दी निदेशक, अभिनेता समीक्षक)
२०६२, गली फूलवाली
दरीबा खुर्द, दिल्ली-६

विष्णु प्रभाकर
(हिन्दी नाटककार)
८१६, कुण्डेवालान दिल्ली-६

धीरेन्द्र नारायण
(हिन्दी नाटककार, निदेशक)
डी- II/१८५ किदवई नगर पश्चिम
नयी दिल्ली-२३

❁ लखनऊ

अमृतलाल नागर २३५०१
(हिन्दी अध्येता) (घर)
चौक लखनऊ

जयदेव शर्मा 'कमल' २२०११/४७
(निदेशक)
ड्रामा प्रोड्यूसर आकाशवाणी, लखनऊ

डा. भय्यूलाल सुल्तानिया 'अज्ञात' २७१०८
(हिन्दी अध्येता-समीक्षक)
१६६/८६ ए, खयालीगंज, लखनऊ

देवीलाल सामर — टेलीफोन ६८
भारतीय लोक कला मंडल
पंचवटी, उदयपुर

गणपतचन्द्र भंडारी
(निदेशक)
प्राध्यापक हिन्दी विभाग
जोधपुर विश्व विद्यालय, जोधपुर

गिरीश के सुमन
(नाटककार, अभिनेता, निदेशक)
३, मोतीलाल भवन
रातानाडा रोड, जोधपुर

हनुमानप्रसाद सक्सेना
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक)
२४६०, तेलीपाड़ा, जयपुर-३

मदन मोहन माथुर
(हिन्दी-अंग्रेजी निदेशक, समीक्षक)
प्राध्यापक लाचू मेमोरियल कॉलेज जोधपुर.

मणि मधुकर
(निदेशक, समीक्षक)
एफ/४०६, गांधी नगर, जयपुर

प्रकाश नागर
(अभिनेता, निदेशक)
प्रतापमल लोढा-भवन
मोहनपुरा, जोधपुर

पो. सुन्दर — टेलीफोन
नाट्यकला विद्यापीठ, आचार्य श्री राम विद्यालय,
बीकानेर

रणवीरसिंह — ६१६११
(निदेशक) — (घर)
दु दलोद हाऊस, सिविल लाइन्स जयपुर.

रूपराज व्यास (टारज़न)
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक)
जोधपुर विश्व विद्यालय, जोधपुर.

सुल्तानसिंह 'प्रेम'
(नाटककार, अभिनेता, निदेशक)
प्रसार-प्रचार अधिकारी
आकाशवाणी, जयपुर.

त्रिलोकी नाथ भारद्वाज
(अभिनेता, निदेशक)
टेलीफोन प्रधालय
अजमेर (राजस्थान)

डा. विश्वनाथ शर्मा
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक-समीक्षक)
विष्णु सदन
१०७, महाराजा अजीतसिंह कॉलोनी जोधपुर.

❀ वाराणसी

टेलीफोन

डा भानु शकर मेहता ६३४४८
के ३७/२० सोरा कूआ, बुलानाला (दफ्तर)
वाराणसी (उ प्र) ६४४४१ (घर)

कु वरजी अग्रवाल
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक समीक्षक)
सी के १५/२६, भारतेन्दु मार्ग, वाराणसी १

सर्वदानद ६२७६०
(अध्येता अभिनेता, निदेशक) (घर)
काशीनागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

त्रिलोचन प्रसाद भार्गव
(हिन्दी निदेशक)
मत्री, श्री नाट्यम, ३/३८, गाय घाट, वाराणसी

❀ विविध

अरुणकुमार सिन्हा
(हिन्दी अभिनेता, निदेशक)
द्वारा आकाशवाणी, पटना-१

टेलीफोन

बलवन्त गार्गी
भारतीय नाटक विभाग
पंजाब विश्व विद्यालय, चंडीगढ़-१४ — ९४८

डॉ कु. चन्द्रप्रकाशसिंह — (घर)
(हिन्दी नाटककार अध्येता)
हिन्दी विभागाध्यक्ष मगध विश्व विद्यालय
शांति सदन, पीपरपती
न्यू एरिया, गया, (बिहार)

डा. चंद्रूलाल दुबे
(हिन्दी अध्येता)
४३८, आमोद गगावेश, कोल्हापुर (म. रा)

मास्टर फिदा हुसैन
कटार शहीद, मुरादाबाद

ज्ञानदेव अग्निहोत्री
(नाटककार, निदेशक)
८/७७ आर्य नगर, कानपुर

कारन्त ब. व
(हिन्दी कन्नड़ अभिनेता, निदेशक-अनुवादक)
द्वारा कन्नड साहित्य संघ
५५३/१२ वेंकट रंगपुरम
पैलेस गुट्ट हल्ली, बेंगलूर-३.

टेल

प्रो. सत्यमूर्ति
(हिन्दी निदेशक)
८/२८ आर्य नगर कानपुर.

विवेक दत्त झा
(हिन्दी अभिनेता निदेशक)
पुरातत्व विभाग, सागर विश्व विद्यालय,
सागर (म प्र)

विजय बापट
(हिन्दी निदेशक, समीक्षक-अनुवादक)
११, शांति नगर
विवेकानन्द मार्ग, ग्वालियर-१

विजय चौहान
(हिन्दी नाटककार निदेशक)
राजनीति विभाग, सागर विद्यालय
सागर (म. प्र.)





